पितृभूमि

[प्रान्त प्रदेश के एक पितृभूमि से प्रेम रखने वाले कुटुम्ब की रोमांचकारी गाथा--उपन्यास के रूप में]

लेखक—

ठाकुर राजबहादुर सिंह

सम्पादक—

'श्री वेंकटेश्वर समाचार' बम्बई

प्रकाशक—

प्रमोद-पुस्तक-माला, कटरा,

प्रयाग।

प्रथम संस्करण १९०० } जुलाई सन् १९४२ { मू० ।।।)

4

प्रकाशक
पं० करुणाशंकर शुक्ल
प्रोप्राइटर—प्रमोद पुस्तक माला
कटरा, प्रयाग।

मुद्रक
श्री रघुनाथप्रसाद वर्मा
नागरी प्रेस, दारागंज,
प्रयाग।

सस्नेह भेंट

उपक्रम

दस वर्ष पहले की बात है। उन दिनों मैं दिल्ली में था। शाम को जब सूर्य की रक्ताभ किरणें शाहजहाँ के कीर्ति-चिह्न—लाल क़िले और जामा-मसजिद पर पड़ने लगतीं, मैं प्रायः सान्ध्य-समीर सेवन करते हुए जामा मसजिद के पूर्ववर्ती शाही फाटक की सुविस्तृत सीढ़ियों के निकट लगे हुये बाज़ार से यों ही मन-बहलाव के लिये निकल जाया करता था। मन-बहलाव ही नहीं, कभी-कभी बड़ी सुन्दर चीज़ें कौड़ियों के मोल हाथ लगा जाती थीं, इसलिए कौवालों की मन फड़का देने वाली कव्वालियाँ, मौलवियों के सर्व कष्ट-निवारक तावीज़ों तथा हकीमों की सर्व व्याधिनाशक पुड़ियों की ओर ध्यान न देकर मैं उपर्युक्त सीढ़ियों से मिलती हुई दुकानों पर ही नज़र दौड़ाता हुआ निकल जाया करता था। मेरी दृष्टि प्रायः दो ही चीज़ों पर पड़ती थी—एक तो थीं प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकें और दूसरी हस्तचित्रित पुरानी तस्वीरें।

जिन दस-पन्द्रह दुकानों पर मेरी उत्सुक दृष्टि पड़ा करती थी उनमें बीचोबीच तीन या चार दुकानें पुरानी पुस्तकों की थीं जिनमें कभी-कभी दुष्प्राप्य हस्तलिखित पुस्तकें और सदियों पुराने चित्र भी देखने को मिल आया करते थे। कहने को तो ये दुकानें 'सेकण्ड-हैण्ड

बुक शाप' (पुरानी पुस्तकों की दुकान) कहलाती थीं और यदि मैं भूलता नहीं, तो एक-दो दुकानों पर उनके व्यवसाय के परिचायक साइन-बोर्ड (नाम-पट) भी रक्खे रहते थे; पर उनमें पुस्तकों और चित्रों के अतिरिक्त घड़ी, फोनोग्राफ़, साइकल के पुर्ज़े तथा कभी-कभी फौजों के रद किये हुए ख़ाकी ओवरकोट भी विक्रयार्थ प्रस्तुत नज़र आते थे। केवल एक ही दुकान ऐसी थी जिस पर प्राचीन पुस्तकों और चित्रों के अतिरिक्त न तो कभी कोई और चीज़ दीखती थी और न कोई साइन बोर्ड या प्रदर्शन का ढङ्ग दीखता था। इस दुकान पर लगभग ८०-८५ वर्ष की आयु का एक वृद्ध पठान बैठा हाथ में तस्बीह लिये इतमीनान से डुलाया करता था। ऐसा मालूम होता था कि उसे न दुकानदारी की पर्वाह है, न पुस्तकों और चित्रों को क़रीने से सजा-कर रखने की। वृद्ध की मेंहदी से रँगी हुई लाल दाढ़ी, कुलाह के ऊपर बँधी हुई ख़ाकी पगड़ी और सुर्ख़ चेहरे में नक्षत्र के समान चम-कीली कंजी आँखें कोई पूर्णतः तभी देख सकता था जब उसकी दुकान की कोई चीज़ पसन्द करके उससे दाम पूछता, अन्यथा वह सिर नीचा किए माला फेरने में ही तन्मय रहा करता था।

शुरू के कुछ दिनों तक तो मैं उस वृद्ध और उसकी दुकान की ओर विशेष आकर्षित नहीं हुआ, क्योंकि वह अधिकांशतः फ़ारसी और अरबी भाषा की ही पुस्तकें रखता था। परन्तु चित्रों की भाषा सार्वभौम होती है, अतः जब कभी उसके यहाँ कोई चित्र रक्खा होता, मैं अवश्य रुक कर उस पर दृष्टि-विक्षेप कर लिया करता था। एक दिन उसकी दूकान पर तेहरान के एक पुराने चित्रकार की अद्भुत कृति

देखकर मैंने बुड्ढे से क़ीमत दरियाफ़्त की तो उसकी नीचे झुकी हुई गर्दन ऊपर उठी और उसके सौम्य, सुदृढ़ और ताज़गी से भरे मुख-मण्डल को देख कर मैं स्तम्भित-सा रह गया। एक साथ मेरे हृदय में यह भाव उदय हुये कि यह वृद्ध कोई असाधारण व्यक्ति है और उसके अतीत जीवन का सम्बन्ध संसार की किन्हीं विशिष्ट घटनाओं से होना चाहिये।

तस्वीर मैंने ख़रीद ली, और उस दिन से मैं नित्य सायंकाल उस वृद्ध पुस्तक-विक्रेता के पास जाने लगा। आरम्भ के कुछ दिनों तक तो उसने मेरी ओर कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया और उसका व्यवहार ऐसा ही रहा जैसा एक ग्राहक के साथ होना चाहिए। जब मैं पूछता—"खाँ साहब, कोई नयी तस्वीर आयी?" तो उसका जवाब यही होता कि नयी तस्वीर तो 'फ़ोटोगिराफ़र' के यहाँ मिलेगी; यहाँ तो पुरानी और दस्ती तस्वीरें ही आया करती हैं।"

लगभग तीन-चार मास के अर्से में एक-एक करके मैंने उससे दस तस्वीरें ख़रीद डालीं। अब बुड्ढा समझने लगा कि मुझे भी आला दर्जे की मुसव्विरी की कुछ परख है। धीरे-धीरे वह मुझे अपनी दूकान पर बैठाने लगा, कभी तेहरान की चित्रकारी के नमूने दिखाता तो कभी शीराज़ की मुसव्विरी का कमाल दिखाने की अनुकम्पा करता। धीरे-धीरे वह मुझसे सीमा-प्रान्त के अफ़रीदी मोहमन्द और गिलगई आदि फ़िर्क़ों की अनेक दिलचस्प कहानियाँ सुनाने लगा—सीमाप्रान्त का इतिहास, अंग्रेजों की कूटनीति और "१८४८ ई० की उस अशुभ घड़ी की चर्चा जब सीमाप्रान्त का मानचित्र लाल रंग में

रँगा गया। इन घटनाओं के वर्णन के उप-संहार में वह सर्द आह भरकर कहता—"क्या पूछते हो ठाकुर साहब, हमने अपनी आज़ादी ही नहीं खोयी; हम में न मज़हब का पास रहा, न पड़ोस का लिहाज़—न हिन्दू हिन्दू रहे, न मुसलमान मुसलमान। हम में अपने वतन की वह मुहब्बत नहीं रही जो आज़ाद रहने लायक़ क़ौम में होनी चाहिए। वतन की मुहब्बत में दुनिया की कितनी ही क़ौम के लोगों ने अपना सब कुछ निसार कर दिया है। ख़ुद हमारे ही शहर के बाशिन्दे एक यहूदी ने ऐसी मिसाल पेश कर दी थी;........पर अब उन सब बातों का ज़िक्र फ़िज़ूल है।"

उसके इस वार्तालाप से प्रोत्साहित होकर मैं उस बेपरवाह दुकान-दार के पास बैठने में अधिकाधिक समय व्यतीत करने लगा। होते-होते परिचय का स्थान घनिष्टता ने प्राप्त कर लिया। एक दिन मैंने मौक़ा पाकर उससे कहा—"खाँ साहब, अब तो आप जानही गये, मैं मुसन्निफ़ हूँ और ऐसे वाक़यात की तलाश में रहता हूँ जिनपर रंगामेज़ी करके दुनिया को ऐसी कहानियाँ पढ़ने को दूँ जिनसे वह फड़क उठे। आपने उस दिन जिस यहूदी की चर्चा की थी, उसका मुफ़स्सिल हाल अगर मुझसे बयान कर सकें तो ऐन नेवाज़िश हो।"

इस पर वृद्ध ने सीधे-सादे शब्दों में पेशावर के यहूदी बेन इज़रा के पितृभूमि-प्रेम का जो वर्णन किया उसी के आधार पर अगले पृष्ठों में स्वच्छन्द काल्पनिक उड़ान से संयुक्त लघुपन्यास चित्रित करने की चेष्टा की गयी है। —लेखक

पितृभूमि

[१]

अंग्रेजी और मुसलमानी राज्यों के पूर्व, भारत का वह भाग जो आज सीमाप्रान्त के नाम से विख्यात है, विशाल हिन्दू-साम्राज्य का एक भाग था। त्रेतायुग में रघुवंशियों का साम्राज्य अफ़गानिस्तान तक था और सीमाप्रान्त तथा अफ़गानिस्तान में हिन्दुओं का निवास था, यह बात गन्धार (कन्धार)-नरेश की पुत्री कैकेयी के अयोध्या की रानी बनने से ही सिद्ध हो जाती है। इस्लाम मज़हब का प्रचार हुए अभी कुल तेरह सौ वर्ष हुए हैं। इसके पूर्व सीमाप्रान्त पर अर्से तक बौद्ध राजाओं का शासन था, यह पेशावर के निकटस्थ पर्वत-श्रेणी पर खुदे पाली भाषा के राजाज्ञा पत्र से प्रमाणित हो चुका है। कनिष्क के समय के पेशावरस्थ स्तूप पर यह स्पष्ट लिखा है कि यह प्रान्त 'गन्धार' नाम से बौद्ध राजाओं के अधिकार में था। यही नहीं १००९ ई०

मुस्लिम-शासक की लूट-खसोट और कुछ भ्रमणशील स्वभाव के कारण अपना मकान औने-पौने दामों में बेच तथा व्यवसाय समाप्त कर, अज्ञात और अलक्ष्य भाव से प्रस्थान कर दिया था।

सीमान्त प्रदेश में अंग्रेजों का शासन और उनकी न्यायनीति का दबदबा अच्छी तरह छा जाने के पूर्व पेशावर और उसके आस पास जिस अव्यवस्थित मुसलमान सरदार का प्रभाव था—क्योंकि उसे शासक कहना व्यंग मात्र होगा—उसका नाम था अताउल्लाह। उसका शासन नाममात्र को होते हुए भी रोब-दाब अधिक था। उसकी रुचि की माप उसकी आमदनी के अनुपात से कहीं ऊँची थी। वह धनिक व्यापारियों को सताकर उनसे पैसे एंठने, नाच देखने और मदिरा-पान करने का बड़ा ही शौक़ीन था। वह सुदूर फ़ारस से ऊँटों पर लदकर आने वाली मदिरा पीता, वहाँ से प्रचुर धन व्यय कर अल्पवयस्क लड़कियाँ अपनी काम वासना की तृप्ति के लिये मँगवाता। यह सब होते हुए भी पार्श्ववर्ती फ़िर्क़ों के लोग उसके नाम से भय खाते थे, क्योंकि वह लड़ाई में भी सीमाप्रान्त में अपना सानी नहीं रखता था। उसके सैनिक उस पर जान देते थे। उसे हमेशा रुपयों की तंगी रहती थी, क्योंकि चाहे जितना अधिक धन मिलता वह अल्पकाल में ही अपने और अपने साथियों के ऐशो-आराम में उड़ा देता और नया ढंग उसे फिर वसूल करने का सोचना पड़ता। वह अपनी अधिकांशतः भुक्खड़ मुसलमान प्रजा से तो ऐसे मौक़ों पर प्राप्त कर ही क्या सकता था; पर हिन्दू, यहूदी तथा

अन्य जाति के पेशावरस्थित व्यापारियों से खूब धन चूसा करता था। जब तक इन व्यापारियों का व्यवसाय पेशावर में धड़ल्ले से चलता रहा, उन्होंने धन देने में आना-कानी नहीं की। यहूदी व्यापारियों की संख्या यद्यपि हिन्दुओं से बहुत ही कम थी, पर उच्च कोटि के व्यापार और लेन देन में यहूदियों का काम हिन्दुओं से बढ़-चढ़ कर था। यहूदियों की यह विशेषता है कि ये परिश्रम-पूर्वक सब प्रकार के अधिक लाभ-दायक व्यवसाय पर कब्जा करने, शासकों की चापलूसी करने और ऊँची से ऊँची सूदखोरी करने में संसार की सब जातियों से सर्वत्र बाजी मार ले जाते हैं। पेशावर के यहूदी स्वयं अला-उल्लाह को भी सूद-दर-सूद पर रुपये देने और इस प्रकार सरकारी महाजन होने के गौरव से लाभ उठाकर जन-साधारण को ऋण देने में विशेष तरजीह प्राप्त करते थे। इस प्रान्त में सूदखोरी इसलिये भी अधिक लाभप्रद थी और है कि शरअ के अनुसार मुसलमान वहाँ सूद नहीं ले सकते। मुसलमान सरदारों को यहूदियों का यह जीवन कौतूहलमय लगता था, क्योंकि इतने भीरु कातर और कमजोर होते हुए भी यहूदी जबर्दस्त खूँखार और भयानक सरहद्दी पठानों को क़र्ज़ देने में जरा भी भय नहीं करते थे कि उनकी रक़म मारी जायगी। इसका कारण यह भी था कि पठान स्वभाव के अत्युग्र होते हुए भी ईमानदार होते थे। किन्तु, फिर भी यदि यहूदियों में असाधारण नम्रता न होती तो उनका प्रचुरधन सरहद्दी लोग प्रकारान्तर से हड़प

कर चुके होते। अताउल्लाह की नीति भी उन्हें यह व्यवसाय करते रहने में सहायक होती थी। अताउल्लाह सोने के अण्डे देनेवाली मुर्गियों को एक साथ हलाल कर के सारे अण्डे प्राप्त करने की मूर्खतापूर्ण लिप्सा नहीं करता था, क्योंकि यहूदियों का सारा धन भी उसे सदा के लिये अर्थ-संकट से मुक्त नहीं कर सकता था। वैसे जरूरत पड़ने पर तो उसे कहीं न-कहीं से रुपया प्राप्त होही जाता था। इसके लिये वह आवश्यकतानुसार कई प्रकार के उपाय काम में लाता था—कभी नम्रता, कभी कठोरता और कभी भारी सूद का लालच। यहूदी व्यापारियों द्वारा उसकी आवश्यकता पूर्ति हो जाया करती थी। बीच बीच में कभी कभी वह एकाध यहूदियों पर ऐसी दया भी दिखाता था जिसे देखकर आश्चर्य-चकित होना पड़ता था। वह प्रसिद्ध यहूदी व्यापारियों को बहुत अधिक सताकर पेशावर नगर का अपना स्थायी बैंक तोड़ना नहीं चाहता था। फिर भी बेन इजरा नामक जिस यहूदी व्यापारी की चर्चा ऊपर की गयी है वह संयोगवश अताउल्लाह की लूट का शिकार अत्यधिक बना और दया का पात्र अत्यल्प। बेन इजरा लड़कपन से ही अपने पिताको अताउल्लाह की भारी लूट का शिकार बनते देखता आया था—कई बार अताउल्लाह ने भारी सूद का लालच देकर उसके बाप याकूब इजरा से लम्बी रक़में क़र्ज़ में लीं, जिन्हें उसने अब तक नहीं चुकाया था। पिता के देहान्त के बाद जब नवयुवक बेन इजरा पुराने क़र्ज़ की रक़म

वसूल कर सकने से वञ्चित रहा और दो-एक बार फिर अताउल्लाह को और रक़म ऋण देने को बाध्य हुआ, तो उसके मन में इस मुस्लिम शासक के प्रति घोर घृणा उत्पन्न होगयी। इस बर्बर नगर में अपने पड़ोसी के लड़के शमसुद्दीन को छोड़ इसका और कोई मित्र नहीं था।*शमसुद्दीन से उसकी ऐसी गाढ़ी मित्रता थी कि एक बार शमसुद्दीन ने अपनी जान पर खेल कर उसे आततायियों से बचाया था। वह नहीं चाहता था कि ऐसे मित्र को छोड़ कर वह चला जाय, पर आर्थिक मार बुरी होती है। आजीविका-वश घनिष्टतम मित्रों से भी पृथक होना पड़ता है। जीवन-यात्रा इस प्रकार की विडम्बनाओं से परिपूर्ण होती है। इजरा को किसी प्रकार यह विश्वास-सा हो गया कि पेशावर छोड़ जाने से ही उसका कल्याण होगा। फलतः उपर्युक्त घटना के एक मास के अन्दर ही, जैसा कि ऊपर बताया गया है, उसने अपना सब व्यवसाय समाप्त कर कलकत्ते की ओर प्रस्थान कर दिया।

*यही शमसुद्दीन महाशय दिल्ली की उस पुरानी पुस्तकों की दुकान के मालिक थे जिसका वर्णन 'उपक्रम' में किया गया है।

—लेखक।

[२]

कलकत्ता सदियों से भारत का प्रमुख नगर है। बंगाल मध्य काल से ही कला-कौशल का प्रधान प्रान्त माना जाता रहा है। कलकत्ता उसका अवशेष और स्मारक मात्र रह गया है। पुण्य-तोया भागीरथी के तट पर बसने के कारण उसे विदेशी माल निर्यात करने की वैसी ही सुविधा प्राप्त है जैसा समुद्र तटस्थ बन्दरगाहों को हुआ करता है। देशी और विदेशी दोनों ही प्रकार के व्यापारों को अनेक सुभीते तथा भारत की राजधानी होने के कारण विगत उन्नीसवीं शताब्दी में इसका व्यापार अधिक बढ़ा है। प्रत्येक जाति और प्रत्येक देश के लोग वहाँ व्यापार, नौकरी और उद्योग-धन्धे के लिये आते-जाते हैं। भारत के अन्य बड़े और प्रधान नगरों की भाँति यहूदी जाति ने यहाँ भी अपनी व्यापारिक बुद्धि का चमत्कार दिखाने का अवसर प्राप्त किया और जवाहरात एवं बैंकिंग के व्यवसाय में काफ़ी दिलचस्पी ली। यहूदी व्यापारियों में कुछ बड़े ही सफल और धनाढ्य व्यक्तियों के नाम उन्नीसवीं सदी में भारत भर में विख्यात होगये थे। यही कारण था कि बेन इजरा पेशावर से कलकत्ते के लिये रवाना हुआ। कलकत्ता पहुँचकर बेन इजरा ने वहाँ के प्रमुख यहूदी व्यापारियों से मुलाकात की और अपना

इतिहास बतलाते हुए पेशावर के उत्पात और अपने गृह-त्याग का कारण बतलाया। यहूदी जाति को कंजूस, सूदखोर और डरपोक आदि चाहे जो कह लीजिए; पर उसमें एक ऐसी विशेषता अवश्य होती है जो अन्य थोड़ी ही जातियों में पायी जाती है—वह अपने जाति-भाइयों का सदा खयाल रखते हैं और अवसर आने पर उनकी मदद करने से नहीं चूकते। उन दिनों कलकत्ते में सैमुएल नामक एक प्रसिद्ध यहूदी जौहरी था जिसकी शिकागो (अमेरिका) में भी दुकान थी। अपनी शिकागो की दुकान के लिए उसे एक आदमी की जरूरत थी। बेन इजरा के तेजस्वी और दृढ़ व्यक्तित्व ने उस पर ऐसा प्रभाव डाला कि उसने उसे ही अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजने का निश्चय किया। अमेरिका में हीरे-जवाहरात के व्यवसाय के विस्तार की अत्यधिक सम्भावना देखकर चतुर सैमुएल ऐसे व्यक्ति की तलाश में था जो उसके व्यवसाय को आगे बढ़ा सकता। बेन इजरा में उसने प्रगतिशील युवक के सभी लक्षण देखे और अन्त में उसे अपनी दुकान का व्यवस्थापक बनाकर अमेरिका भेज दिया।

बेन इजरा उतावला और भावुक बहुत था। अमेरिका जाने के लिए जब वह जहाज से रवाना हुआ तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि शीघ्रता में आकर उसने अपनी पितृ भूमि का परित्याग कर अच्छा काम नहीं किया। कम से कम उसे अपने बाप-दादों का घर तो नहीं बेचना चाहिए था। जिस घर में उसका

जन्म हुआ था, वह आज दूसरों के कब्जे में होगा। पेशावर का वही नगर जो पिछले कुछ दिनों से उसे काटे खा रहा था, उसके मानस-पटल पर मनोहर विस्मृत स्वप्न-सा घूमने लगा। शमसुद्दीन का भोला मुख मण्डल यहाँ की गलियाँ, लोग और नगर की पाश्ववर्ती पहाड़ियाँ सजीव मूर्ति की भाँति उसके मस्तिष्क में घूम गयीं। उसके मित्रों ने उससे घर न बेंचने का कैसा अनुरोध किया था और उसने किस प्रकार सबकी उपेक्षा करके मनमाना काम कर डाला था। आखिर अताउल्लाह उसे खा तो न जाता। हाँ, क़र्ज लेने में जबर्दस्ती करता तो आगे-पीछे वसूल हो ही जाता। न भी वसूल होता तो अन्य मुसलमानों से जो सूद मिलता था उसका लाभ देखते हुए पेशावर छोड़ना उचित नहीं था। आखिर इस प्रकार उसका कितना ही रुपया डूब गया। क़र्जदार कैसे .खुश हो रहे होंगे कि बला टली। परन्तु अब जहाज छूट चुका था। अतः यह कल्पना व्यर्थ थी। न मालूम कब पितृ भूमि के फिर दर्शन होंगे, यही सोचते हुए उसने अपनी यात्रा कष्ट के साथ तय की।

× × ×

शिकागो पहुँचकर बेन इजरा ने थोड़े दिनों में ही जवाहरात की दुकान का सारा काम संभाल लिया। साल के अन्दर ही जवाहरात की इतनी अधिक बिक्री हुई कि दुकान के मालिक ने इजरा को वेतन के अतिरिक्त बिक्री पर ३ प्रतिशत कमीशन देने की स्वीकृति भी दे दी। राजधानी में होने के कारण सरकारी

अफ़सर वैसे भी उस दुकान से माल ख़रीदते थे; पर इज़रा के मधुर स्वभाव के कारण उस दुकान की ओर अधिकाधिक ग्राहक आकर्षित होने लगे। दूसरे साल के अन्त में यह दुकान शिकागो की सर्वश्रेष्ठ जौहरियों की दुकानों में होगयी। धीरे-धीरे बेन इज़रा ने प्रतिष्ठित नागरिकों तथा सरकारी अफ़सरों से घनिष्ठता प्राप्त करनी शुरू कर दी और अपने सद्गुणों के कारण नगर के प्रत्येक सामाजिक समारोह में वह निमंत्रित होने लगा। सभी क्षेत्र के चुने हुए लोगों से इज़रा की घनिष्टता होने लगी। पाँच वर्ष के अन्त में यह दुकान शिकागो की सर्वश्रेष्ठ जवाहरात की दुकान बन गयी। इज़रा की अवस्था इस समय पच्चीस वर्ष की हो चुकी थी। उसका शारीरिक सौष्ठव, गोरारंग, युवावस्था और आर्थिक स्थिति ऐसी थी जिसकी ओर बीसों अमेरिकन नवयुवतियाँ आकर्षित हुईं, पर सब प्रकार से शिष्टता पूर्ण व्यवहार करते हुए भी इज़रा ने कभी किसी लड़की से शादी का प्रस्ताव नहीं किया। कितनी ही युवतियों ने इज़रा को लज्जालु समझ प्रत्यक्ष कुछ न कहकर पत्र-व्यवहार द्वारा आकर्षित करने की चेष्टा की, किन्तु किसी को सफलता नहीं मिली। बात यह थी कि अमेरिका-जैसे स्वतंत्र देश के मुक्त वातावरण, आर्थिक सम्पन्नता और मित्रों की भरमार में रहकर भी इज़रा को न जाने क्यों अपनी जाति के बन्धनों और पितृ भूमि पेशावर की रह-रह कर याद आया करती थी। वह प्रायः स्वप्न देखता कि वह जहाज द्वारा भारत को रवाना होने जा रहा है, पर

बन्दरगाह पर पहुँचने के पहले ही उसका जहाज छूट जाता है। फिर कभी स्वप्न देखता कि वह जहाज द्वारा कलकत्ते पहुँच गया है, पर हावड़े में पेशावर के लिये वह जो गाड़ी पकड़ना चाहता वही छूट जाती है। कभी पेशावर के बिल्कुल निकट पहुँचकर भी वह पेशावर में प्रविष्ठ होने से किसी कारण वश रुक जाता है। फिर कभी देखता कि शमसुद्दीन का सौम्य मुख-मण्डल उसे अपनी ओर बुला रहा है। इस प्रकार के और इसी से मिलते-जुलते स्वप्न उसे महीने में एकाध बार जरूर दिखा जाते थे। इससे वह काफी चिन्तित रहता। उसे किसी बात की कमी नहीं थी; पर उस घर को पुनः देखने की लालसा कभी-कभी अत्यन्त प्रबल हो उठती थी जिसमें उसका जन्म हुआ था। कभी-कभी वह हिन्दुस्तानी स्वप्न रहस्य विदों से इन स्वप्नों का रहस्य पूछता तो वे उसका कारण यही बतलाते कि आप में मातृभूमि के दर्शन की उत्कट अभिलाषा है अतः यह स्वप्न उस इच्छा की अपूर्ति का द्योतक है।

किन्तु कुछ भी हो, दुकान की उन्नति दिन दूनी रात चौगुनी होती रही और दुकान के मालिक सैमुएल ने जब इज़रा की प्रबन्ध-पटुता में दुकान की यह असाधारण उन्नति होते देखी तो वह कलकत्ते से स्वयं अपनी एक मात्र कन्या रुबेका को साथ ले शिकागो चला गया क्योंकि उनके परिवार में और कोई शेष नहीं था। शिकागो पहुँच कर और अपने व्यापार तथा इज़रा के प्रभाव को प्रत्यक्ष देखकर सैमुएल ने सबसे पहला काम यह

किया कि दुकान के लाभ में इज़रा का चौथाई हिस्सा कर दिया। किन्तु यह सब हो जाने पर भी इज़रा अभी तक अलग होटल में ही रहता था। सैमुएल इज़रा की अद्भुत कर्त्तव्य शक्ति, क्षमता, सर्व-प्रियता और ऊँचे क्षेत्रों में प्रभाव देखकर उसे अपना बनाने के लिये लालायित हो उठा और अन्ततः उसने अपनी एक मात्र कन्या रुबेका का विवाह बेन इज़रा के साथ कर दिया।

× × ×

इज़रा अब पारिवारिक सुख का लाभ भी उठाने लगा। आर्थिक सुख के साथ-साथ दाम्पत्य-सुख की अटूट धारा में अब वह अविरामगति से प्रवाहित होने लगा। इस प्रकार पाँच वर्ष और इस द्रुतवेग से व्यतीत हो गये कि उन्हें गुज़रते जैसे पाँच महीने भी न हुये हों। बेनइज़रा के एक कन्या उत्पन्न हुई जिसका नाम उसने रैशेल रक्खा।

अब बेन इज़रा सभी वाञ्छनीय भौतिक सुखों की तरंग में बह रहा था। माता पिता के सदृश स्नेह रखने वाले उसके ससुर तो थे ही, उसकी पत्नी उसे प्राणों से भी अधिक चाहती थी और दोनों अपनी पुत्री रैशेल को इतना अधिक प्रेम करते थे जितना कोई अपनी सन्तान को कर सकता है। पारिवारिक जीवन की इस सुखद हिलोर में पड़कर भी बेन इज़रा बीच-बीच में कभी-कभी अपनी अपूर्ण यात्रा के स्वप्न और अपने पेशावरस्थ पितृ-गृह की याद से चिन्तित हो उठता था। उसकी

इस उदासीनता और चिन्ता का कारण उसकी पत्नी तथा ससुर प्राय: पूछा करते थे, पर इज़रा एक गोपनीय रहस्य की भाँति उसे अप्रकट ही रखता था।

× × ×

रैशेल की अवस्था अब लगभग दस वर्ष की होने आयी थी और वह अपने आमोद-प्रमोद और क्रीड़ाओं से घर में आनन्द की वर्षा किया करती थी, किन्तु इसी समय एक दुःखद घटना ने इस पारिवारिक सुख में बाधा उपस्थित कर दी—सैमुएल का हृदय की धड़कन बन्द हो जाने के कारण देहान्त हो गया। वसीयतनामा पढ़ा गया तो मालूम हुआ कि उन्होंने अपनी सारी जायदाद बेटी दामाद और नातिन को बराबर-बराबर प्रदान कर दी है। बेन इज़रा को अपने सबसे बड़े पृष्ठपोषक और सम्बन्धी की मृत्यु से बड़ा दुःख हुआ—वह सारी सम्पत्ति का स्वामी बनकर भी उतना सुखी नहीं हुआ जितना आजकल के लोग हुआ करते हैं। उसका मन बीच-बीच में उचट जाता और उसे भारतभूमि तथा पेशावर नगर की याद सताने लगती। दुर्भाग्यवश अब उसे इस चिन्तापूर्ण स्थिति से छुटकारा नहीं मिल सका था और ससुर को मरे अभी छः मास भी न व्यतीत हो पाये थे कि घोर प्रसव पीड़ा के कारण रबेका का सद्योजात शिशु समेत देहान्त हो गया।

सब प्रकार की सुख-सामग्री और स्वतन्त्रता उपलब्ध होते हुए भी इज़रा का मन अब चौबीसों घण्टे उदास रहने लगा—

अगर कोई कल्पना उसके मन में आनन्द की सृष्टि कर सकती थी तो वह थी अपनी पितृभूमि की स्मृति। संसार के सर्वाधिक धनाढ्य, सुसंस्कृत एवं वैज्ञानिक साधन-सम्पन्न देश की राजधानी में स्वतंत्र और पर्याप्त होते हुए तथा सुखपूर्ण वातावरण में स्वच्छन्द विचरण करते हुए भी शिकागो काट-सा रहा था। नागरिक जीवन से उसका मन ऊब-सा गया। अब वह दुकान के संचालन में व्यक्तिगत-रूप से कम भाग लेने लगा और सब काम नौकर-चाकरों पर छोड़ देने का अधिक आदी हो चला। जिस शिकागो नगर को देखने के लिए देश-देशान्तर के यात्री सहस्रों रूपये खर्च करके पहुँचते हैं वहाँ का निवास उसे काटने-सा लगा। ऐसा मालूम होने लगा जैसे वह एक विशाल जेलखाने में सादी कैद भोग रहा हो। जीवन नीरस-सा मालूम होने लगा और मन सुदूर भारत के सीमाप्रान्त के मुक्त वातावरण में विचरण करने लगा। लड़कपन में जिन गलियों में वह खेला करता था, जिन पहाड़ियों और वृक्षावलियों से उसका आत्मीयों का सा सम्बन्ध हो गया था, उनकी याद उसे आकुल करने लगी। उस समय मुसलमान शासकों और सरदारों की बर्बरता उसे नगण्य-सी मालूम होने लगी। सोचता आखिर शमशुद्दीन भी तो उसी जाति का था। फिर किसी जाति से घृणा करने का उसे क्या अधिकार है। भले को सब जगह देते हैं। कितना सुन्दर है पेशावर और कितने भले हैं वहाँ के निवासी। वे उग्र मिजाज के और मरने मारने के लिये सदा

तैयार रहने वाले हैं सही, पर ये व्यक्ति हैं जो एक बार मित्र बन जाने पर अपनी जान पर खेलकर भी मित्र की रक्षा करते हैं। शमसुद्दीन इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। मेहमानदारी में तो ये एक ही होते हैं और एक बार भूल से भी सही, जिसका नमक खा गये उसे हानि नहीं पहुँचाते। वास्तव में उनमें मानवता के आदिम गुण अभी तक विद्यमान हैं। संसार के सबसे सभ्य देश कहलाने वाले अमेरिका में तो लोग ऊपर से मित्र बने रहते हैं, भीतर से छुरी चलाते हैं। इनकी अपेक्षा ये असभ्य और पिछड़े कहे जानेवाले लोग कितने अधिक सहृदय हैं—उनमें मनुष्यता की कैसी गहरी पुट है—उनका अकृत्रिम, शौर्य और सादगी से पूर्ण जीवन वास्तव में ईर्ष्या का विषय है। अमेरिका का जीवन कितना अस्वाभाविक है—एक दम यांत्रिक रेलों की गड़गड़ाहट, वायुयान की सरसराहट, मिलों की घरघराहट, मोटरों की पों पों से लोगों के कान बहरे से हो जाते हैं—शान्ति और सुस्थिरता वहाँ अज्ञात चीजें हैं। कोई इस वातावरण में रहकर गम्भीर और आध्यात्मिक चिन्तन तो कर ही नहीं सकता। सुबह से शाम तक प्रत्येक व्यक्ति मानों सुदृढ़ लौह-यंत्र से आबद्ध है—खुलकर साँस लेने तक की फुरसत नहीं मिलती। इतने अधिक धन सम्पत्ति की भी वहाँ कोई विशेष क़द्र नहीं है। इतना धन लेकर यदि पेशावर जैसे नगर में रहा जाय तो न केवल उच्चतम पुरुषों में गणना हो सकती है तथा सुख और शान्ति का जीवन व्यतीत हो सकता है।

प्रत्युत परोपकार भी किया जा सकता है । उसके बचपन के दोस्तों को उसकी मदद की कितनी जरूरत है। उसका मित्र शमशुद्दीन मुसलमान होते हुए भी उसे कितना अधिक प्रेम करता था—मुसलमानों का एक भी दुर्गुण उसमें नहीं था—कितनी घनिष्ट मित्रता थी उससे। पहाड़ी के निकट जब एक बार मुहम्मद सरदार के आदमियों ने उसे घेर लिया था तो शमसुद्दीन की बहादुरी से ही उसकी जान बच पायी थी। ऐसे व्यक्ति का कुछ भी लाभ न पहुँचाना क्या गुनाह नहीं है। जिसने किसी की जीवन-रक्षा की हो और स्वयं दरिद्रता में पड़ा हुआ हो, उसे उससे सहायता पाने का पूरा हक़ है। मालूम नहीं उसकी क्या हालत हुई होगी। उसे इतने दिन तक एक पत्र भी न लिखना क्या कृतघ्नता नहीं हुई। ख़ैर आशा है वह अवसर आयेगा जब वह अपने दोस्त की सहायता कर सकेगा।

× × ×

यद्यपि हजरा की अवस्था अभी पचास वर्ष से अधिक नहीं हुई थी, परन्तु इतनी ही उम्र में वह शहर के अस्वाभाविक और अस्वास्थ्यकर वातावरण में रहकर बुड्ढा-सा हो चला था। बहुत दिनों से अपने पितृ-गृह का चित्र जिस प्रकार उसके मानस पटल पर घूमा करता था उससे उसके मन की यह अन्तिम लालसा घनिष्टतर होती जाती थी कि वह एक बार फिर अपनी जन्मभूमि और वहाँ के लोगों को प्रत्यक्ष देखे। यही नहीं, वह यह भी सोचता था कि अंग्रेजों का शान्तिपूर्ण साम्राज्य टूटता

पूर्वक स्थापित हो चुका है अतः अब पेशावर में असभ्य, खूंख्वार और लूट-खसोट करनेवालों का बाहुल्य न होकर सुन्दर परिष्कृत और नवीन ढंग के लोगों का निवास हो गया होगा। पुराने फ़िर्कों के लोग भी नयी सभ्यता से प्रभावान्वित होकर नागरिकों का सा जीवन व्यतीत करने लगे होंगे, क्योंकि अंग्रेज़ जाति ने सारे संसार की कर्कशता और बर्बरता दूर करने की क्रिया में अद्भुत क्षमता का परिचय दिया है। अंग्रेज़ों की नज़र में यहूदी, मुसलमान, हिन्दू और ईसाई सब बराबर हैं और अताउल्लाह की सन्तान! वह तो अब अंग्रेज़ों के वज़ीफ़े पर जीवन व्यतीत कर रही होगी।

---

[३]

अन्ततः बेन इज़रा ने स्थायी रूप से पेशावर में ही जीवन व्यतीत करने के विचार से अपनी शिकागो की दुकान तोड़ दी और आराम की प्रचुर सामग्री तथा पुष्कल द्रव्य लेकर अपनी षोडशी कन्या रैशल के साथ भारत के लिये प्रस्थान कर दिया। जहाज़ रवाना होने पर उसे अपने शिकागोस्थित मित्रों के विछोह का उतना शोक नहीं हुआ जितना पेशावर स्थित मित्रों के पुनर्मिलन का आनन्द। अभी जहाज़ छूटे कुछ ही घंटे हुए थे कि इज़रा की आँखों में पेशावर का दृश्य घूमने लगा और वह नगर और उसके लोग निकट आते प्रतीत होने लगे।

उसके मानस-पटल पर घूमने वाला भारत के सीमा प्रान्त का धुँधला चित्र अब स्पष्टतर होने लगा। कलकत्ते पहुँचने पर अनेक यहूदियों ने उसका आदर-सत्कार किया और उससे वहीं ठहरकर हीरे-जवाहरात का व्यापार करने का अनुरोध किया किन्तु इजरा पर अपने पितृगृह के दर्शन का ऐसा जबर्दस्त नशा सवार था कि कलकत्ता पहुँचने के दूसरे ही दिन उसने पेशावर के लिये तैयारी कर दी।

पेशावर पहुँचकर इजरा ने पहला काम यह किया कि अपना पुराना पितृगृह मुँहमाँगे दामों पर खरीद लिया। कुछ लोग उसे पागल बतलाते और कहते कि इतनी जीर्ण-शीर्ण इमारत को इतने महँगे दामों में यह बूढ़ा यहूदी क्यों खरीद रहा है? इसकी अक़्ल मारी गयी है। कोई कहता--यह उसके बाप-दादों का पुराना घर है, इसमें कहीं कोई खजाना गड़ा होगा। शायद इसीलिए उसने उसे इतने महँगे दामों में खरीद लिया। कुछ ऐसे भी थे जो उसकी भावना की क़द्र करते और समझते थे कि पितृगृह के प्रति ऐसा असाधारण प्रेम होना स्वाभाविक है। दूसरा काम उसने यह किया कि अपने लड़कपन के दोस्त शमसुद्दीन की खोज करायी। मालूम हुआ कि वह पेशावर से दिल्ली चला गया है और वहाँ कोई काम करके पेट पाल रहा है। उसने शमशुद्दीन को तुरन्त पत्र लिखकर पेशावर बुला लिया और उसे पर्याप्त आर्थिक सहायता दी। तीसरा महत्वपूर्ण कार्य इजरा ने यह किया कि शहर के बाहर

जिस पहाड़ी पर वह लड़कपन में खेलने जाया करता था, उस पर बनी एक गढ़नुमा विशाल इमारत खरीद ली। चारों ओर से सघन वृक्षावली द्वारा आच्छादित इस टीले पर, दुर्ग के समान सुविस्तृत और सुदृढ़ इमारत केवल दो प्राणियों के लिये खरीदना भी लोग यहूदी का पागलपन ही समझते थे। कुछ लोग कहते कि अमेरिका से प्रचुर धन कमा कर वह इसी प्रकार उड़ाने के लिये आया है। उसके ऐश्वर्य से भी अधिक बहुत-से लोग उसकी षोड़शी पुत्री रैशल को देखकर आश्चर्य किया करते थे। वह तरह-तरह के नये फ़ैशन के वस्त्र पहनकर नित्य पेशावर की गलियों में स्वतंत्र विचरण किया करती थी। पर्दे के इस गढ़ पेशावर में बहुत से गुण्डे रैशल के अर्द्धनग्नता पूर्ण फ़ैशन को देख कर छटपटा उठते थे। इतनी खूबसूरत गोरी और प्रस्फुटोन्मुख यौवना लड़की का नाम मात्र के झीने वस्त्र पहनकर सरे बाज़ार घूमना काम वासना की साक्षात मूर्ति पठान युवकों को कब सहन हो सकता था। वास्तव में पेशावर नगर की गलियों में ऐसी सुन्दरी लड़की खुले केश, नंगी बाहें, और सीने तक उघाड़े गाउन पहन कर कभी नहीं देखी गयी थी। नवीनता कौतूहलवर्द्धक होती ही है।

रैशल वक़्त-बेवक़्त चारों ओर अकेली घूमा करती थी, अमेरिका स्वच्छन्दता से परिपूर्ण मुक्तवातावरण की अभ्यस्त लड़की भला चहारदीवारी के अन्दर क्यों बन्द रहती। वह दुकानों पर जाती, सौदा खरीदती, जगह-जगह आकर्षक दृश्यों

और वस्तुओं के फोटो खींचती। इस बात का उसे किंचितमात्र भी ध्यान नहीं था कि पेशावर के ऐयाश मुसलमान उसे किस आसक्तिपूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं। वह वहाँ किसी स्थानीय निवासी की भाँति नहीं, वरन् एक यात्री की तरह घूमा करती थी। वहाँ की प्रत्येक वस्तु पर उसकी उत्सुकतापूर्ण दृष्टि पड़ती थी; किन्तु दुष्ट पठानों की संकीर्ण दृष्टि में वह एक बेहया लड़की मालूम होती थी जो आसानी से उनकी माशूक़ा बन सकती थी। यही नहीं, उसकी मुस्कराहट, प्रगल्भ वाणी और निर्भय विचरण उनकी दृष्टि में इश्क़ का आह्वान था। उसके खुले रेशम के लच्छों के समान चमकीले भूरे बाल, उसकी खुली गोरी-गोरी बाहें, घुटनों के नीचे चर्म के ही रंग के रेशमी मोज़ों से आवृत छोटे-छोटे पाँव युग-युग से स्त्रियों को पर्दे में छिपा रखने वाली मुसलमान जाति के लिये चरम आकर्षण और आमंत्रण के मुख्य साधन बन गये।

× × ×

अकस्मात् एक दिन एक व्यक्ति ने आकर बेन इज़रा को एक ऐसा प्रस्ताव सुनाया जिसे उसने न केवल क्रोध और तिरस्कार पूर्वक अस्वीकार ही कर दिया, बल्कि प्रस्तावकर्त्ता को फ़ौरन अपने घर से बाहर निकलवा दिया। इस घटना को हुए कई दिन व्यतीत होगये, पर उसने रैशल से उसकी चर्चा नहीं की, क्योंकि उसे भय था कि उस प्रस्ताव की चर्चा कर देने से लड़की के सुख में बाधा पड़ जायगी। वास्तव में

इस घटना को उसने विशेष महत्व भी नहीं दिया और उसके ख़्याल में अंग्रेज़ी राज्य की सुखद शीतल छाया में किसी प्रकार के ख़तरे का अन्देशा भी नहीं था। पेशावर अब बर्बर मुसलमानों का गढ़ न रहकर अंग्रेजी सेना का केन्द्र हो चला है। जहाँ अंग्रेजों की सबसे बड़ी फ़ौजी छावनी है वहाँ बड़े से बड़ा ख़तरा क्या फूँक मारते उड़ नहीं जा सकता? आततायी मुसलमानों को दबाने के लिए अंग्रेजों ने सुन्दर व्यवस्था कर रखी है। किन्तु आगे चलकर इज़रा को मालूम होगया कि उसकी धारणा ग़लत थी और अभी तक मुसलमानों की उद्दण्डता पर अंग्रेजों के शासन और न्यायनीति का कोई असर नहीं पड़ा था।

× × ×

एक दिन जब रैशेल एक तंग और सुनसान गली से होकर घर की ओर जा रही थी, सहसा उसके सामने एक पठान युवक आ खड़ा हुआ और उसने भुजाएँ पसारकर उसका मार्ग रोक लिया। रैशेल ने जब क्रोध पूर्वक पूछा कि उसने उसका रास्ता क्यों रोक लिया तो वह मुँह बिचका कर ज्यों का त्यों रास्ते में डटा रहा। रैशेल ने कोशिश की कि वह बग़ल से घूमकर आगे निकल जाय, लेकिन इतने ही में एक दूसरे पठान युवक ने आकर उसकी कलाई पकड़ ली और उसे खींच कर एक ओर को ले चला। क्षण भर में ही रैशेल दर्जनों गुण्डों से घिर गयी जो उसे घूर-घूर कर विविध भाव-भंगी से मुँह बनाने

और आँखें मटकाने लगे। दो पूर्ववर्ती गुण्डों ने उसकी दोनों कलाइयाँ पकड़ रक्खी थीं और एक ने उसके गले में हाथ डाल दिया था। लड़की ने भरसक कोशिश की कि वह किसी प्रकार इन गुण्डों से अपना शरीर छुड़ा कर निकल भागे; पर कहाँ हट्टे-कट्टे सरहद्दी पठान युवक और कहाँ वह सुकुमारी यहूदी बाला। वह एक कोमल कली की भाँति क्रूर हाथों से मसली जा रही थी। क्रोध और विवशता से रैशेल के श्वाँस-प्रश्वाँस बन्द-से हो रहे थे। इसी समय शहर से छावनी की ओर लौटते हुए दो गोरे सैनिक उस गली के दूसरे छोर से आ निकले।

वास्तव में दोनों गोरे सैनिक हलकी शराब पीकर शहर से छावनी की ओर मन्द गति से टहलते हुए जा रहे थे। वे बिल्कुल शान्त मुद्रा में थे, और अशान्ति का उन्हें कोई खटका हो भी क्या सकता था। उस सुनसान गली के दूसरे छोर से धीरे-धीरे टहलते हुए जब वे उपर्युक्त घटनास्थल के निकट पहुँचे तो अकस्मात् एक लम्बी चीख़ सुनकर वे रुक गये। इस बात में कोई सन्देह नहीं रहा कि वह चीख़ किसी स्त्री की थी जो सहायता के लिये पुकार रही थी।

दोनों में से पहले रुकने वाले सैनिक विलियम ने दूसरे सैनिक हैरिस से कहा—"अगर मेरे कान धोका नहीं देते तो मुझे 'हेल्प' (मदद करो) की आवाज़ सुनायी पड़ी है। है तो आश्चर्य की बात! पेशावर की गली में किसी स्त्री का अंग्रेजी भाषा में सहायता के लिए पुकारना, है तो असाधारण बात!

"हाँ," हैरिस ने कहा—और यह चीख़ तो कई बार सुनायी पड़ी है—हमारा ध्यान उधर नहीं था।"

विलियम ने अपनी कमरपट्टी पर हाथ फेरा और तेज़ी के साथ सिर घुमाकर इधर-उधर देखने लगा।

"यह तो निश्चय ही किसी स्त्री की आवाज़ है, और अब भी चीख़ सुनायी पड़ रही है। स्त्री की सहायता के लिए तो मैं सदा तैयार रहता हूँ। चलो, उधर कुछ आदमी दीख रहे हैं—बढ़ो।"

क्षण भर में दोनों विशाल काय गोरे सैनिक मुस्लिम आततायियों की टोली के पास पहुँच गये और विलियम ने तेज़ी से लड़की की कलाई पकड़ने वालों को गाली के साथ बूट की ठोकरें लगायीं।

पल भर में गुण्डे वहाँ से हवा हो गये और गली में इधर-उधर पनाह ढूँढ़ने लगे। विलियम ने प्रकम्पित लड़की को अपनी बलवान भुजाओं में आबद्ध करके सँभाल लिया।

"हैरिस" उसने कहा—"इस अधखिली कली को काले बदमाश मसल रहे थे। हम लोग ऐन वक़्त पर पहुँच गये। इसके केश और कपोल तो देखो।"

"इस धूप में दौड़ने के कारण मेरा तो दम घुटा जा रहा है। यह तो बस पागल बुड्ढे यहूदी की लड़की है जिसने पहाड़ी पर हवेली ले रखी है।" हैरिस ने कहा।

"तुम तो ख़ुद पागल हो," विलियम ने कहा—"जब से पेशावर आये, कभी ऐसी लड़की देखी थी।"

"मुझे छोड़ो।" रैशेल ने कहा। वास्तव में वह बेहोश नहीं हुई थी; केवल घबराहट के कारण उसके श्वाँस रुक से रहे थे।

"मुझे छोड़ दो। कृपा करो। तुम्हारे मुँह से शराब की बदबू आ रही है।" उसने फिर कहा।

"ओ हो! यह तो बहुत अच्छी अंग्रेजी बोलती है।" विलियम ने उसकी ओर तृषित नेत्रों से देखते हुए कहा।

रैशेल ने शराबी सैनिक के आलिंगन से अपना शरीर छुड़ाने की चेष्टा की और एक हाथ छुड़ा कर उसने विलियम के शराब की बदबू से भरे मुँह पर थप्पड़ लगा दी।

विलियम ने अब उसे छोड़ते हुए कहा—"क्या मैंने तुम्हारे साथ कोई बुराई की है? अगर ऐसी बात है तो—"

"हा हा हा!" हैरिस ठहाका मार कर हँस पड़ा।

"हैरिस!" विलियम ने डाँट कर कहा—"तुम मेरे दोस्त हो, पर ऐसी हरकत करोगे तो मैं पीट दूँगा। चुप रहो! तुम्हें शिष्टाचार का कुछ भी ज्ञान नहीं है।"

रैशेल ने उन दोनों के निजी झगड़े में कोई दिलचस्पी नह ली। उसे निश्चय होगया था कि वे दोनों ही शराब पिये हुए हैं। सैनिकों को वह वैसे भी वहशी समझती थी। इसके अतिरिक्त उसकी घबराहट अब भी बिलकुल दूर नहीं हो पायी थी और तुरन्त घर पहुँचने के लिए आतुर हो रही थी। वह फ़ौरन् वहाँ से भागने के लिए तैयार हो गयी।

"तुम भी कम दुष्ट तो नहीं हो," उसने शीघ्रता पूर्वक भागने का उपक्रम करते हुए कहा—"फिर भी उन बदमाशों को मार भगाने के लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूँ।"

"ठहरिये!" विलियम ने कहा—"सम्भव है हमने कोई बहुत बड़ी प्रतिष्ठा का काम न किया हो, पर 'न-कुछ' से 'कुछ' तो अच्छा ही है। यह बात याद रखिये कि पेशावर की गलियाँ नवयुवती के अकेले घूमने के लिए नहीं हैं। यह कोई सुरक्षित जगह नहीं है।" और टोपी उतार कर अदब से झुकते हुए फिर बोला—"हम आपको घर तक पहुँचा आयें तो कोई हर्ज है ?"

"यह कभी भले मानसों में रह चुके हैं, इनके पास अपनी मोटरकार थी।" हैरिस ने कहा।

"नहीं, अगर तुम लोग मेरा पीछा करोगे तो मैं सेनानायक को तुम्हारी शिकायत लिख भेजूँगी।

परन्तु रैशेल ने विलियम के सुगठित और हृष्ट-पुष्ट शरीर को देखा था। जबसे पेशावर आयी थी उसने किसी गोरे पुरुष को इतने निकट से नहीं देखा था। अधिकांशतः यहाँ के मूल-निवासी ही उसे दृष्टिगोचर हुए थे। यद्यपि भारत के उष्ण जलवायु ने विलियम के अत्यन्त गोरे रँग पर कालिमा की हल्की छाया फेर दी थी, पर उसकी पैनी नीली आँखें उसके रक्त का परिचय दे रही थीं। वास्तव में रैशेल को शराब की दुर्गन्ध के अतिरिक्त उसमें और कोई अवाञ्छनीय बात नहीं मिली।

"आपकी ही भलाई के लिए हम आपको घर तक पहुँचा देना चाहते हैं। अब हम आप से कोई बात नहीं करेंगे, पीछे पीछे आपके घर तक चलेंगे। मैं अंग्रेज लड़की को कष्ट में पड़ने नहीं देना चाहता। मैं स्वयं अंग्रेज़ हूँ—"

"पर मैं तो नहीं हूँ। मेरे पिता यहूदी है—हाँ, मेरा जन्म शिकागो में ज़रूर हुआ है। आप लोगों को धन्यवाद। अब मैं विदा लूँगी।"

वह मुँह फेर कर तेजी से चल पड़ी। उसने फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। आगे चलकर जब सड़क पहाड़ी की तरफ़ मुड़ी तो दोनों सैनिकों के भारी जूतों की आवाज़ सुनकर उसके मनमें कुछ हर्ष का ही उद्रेक हुआ।

× × ×

रैशेल के मुँह से जो पहले शब्द फुलवाड़ी में टहलते हुए अपने पिता को सम्बोधन करने के लिए निकले वे इतने उच्च स्वर-संयुक्त थे कि बेचारा बुड्ढा बेन इज़रा आश्चर्य-स्तब्ध रह गया।

"मैं अब फ़ौरन अमेरिका वापिस जाना चाहती हूँ पिताजी।" उसने उत्तेजित स्वर में कहा—"इसी दम लौटना चाहती हूँ। मैं यहाँ क्षण भर भी रहना नहीं चाहती। मुझे इस जगह से घृणा होगयी!"

इसके बाद रैशेल अपने पिता की गोद में सिर डालकर फूट-फूट कर रोने लगी। बुड्ढे ने लड़की के सिर पर हाथ फेर

कर उसे शान्त करने की चेष्टा की। धीरे-धीरे उसे आजकी सारी घटना मालूम हो गयी।

"मेरी बच्ची!" अन्ततः बुड्ढा बड़बड़ा उठा—

"सचमुच यह मेरी ग़लती थी। यह स्थान हमारे रहने योग्य नहीं है।...मैं धीरे-धीरे इस जगह के ख़तरों का अनुभव कर रहा हूँ।...क्या करूँ मुझे अपने पूर्वजों का घर—अपनी जन्म भूमि देखने की लालसा थी। यहाँ शमसुद्दीन के अलावा और कोई अपना मित्र नहीं है।...यहाँ की सड़कें, गलियाँ, पहाड़ और वृक्ष मेरी आँखों के सम्मुख सुचित्रित रंगों में घूमा करते थे।... मेरे लड़कपन की बातें और उनकी स्मृति मुझे यहाँ खींच लायी।...मेरे कानों में यहाँ के शब्द गूँजा करते थे।...मैं अन्धा होकर यहाँ चला आया। पर अब हम लौट चलेंगे; तुम्हारी जन्मभूमि को लौट चलेंगे।"

परन्तु रैशेल को यह पता नहीं था कि बुड्ढे को अपनी मातृ-भूमि उतनी प्यारी हो सकती है जितनी उसे शिकागो थी। उसे नहीं मालूम था कि बुड्ढे इज़रा के प्रत्येक शब्द के पीछे कैसी अगाढ़ वेदना छिपी हुई थी। रैशेल पिता का चुम्बन लेकर उसके बग़ल में बैठ गयी।

"तो फिर हम कब रवाना होंगे?" बेटी ने पिता से पूछा।

"जल्द ही," पिता ने कहा—"एक महीने में; अधिक से अधिक डेढ़ मास लग जा सकता है। इस बीच मुझे यह स्थान छोड़ने का और यहाँ की जायदाद का निश्चित प्रबन्ध कर लेना

होगा। इतने दिनों तक तुम अकेली शहर के बाहर जाना बन्द कर दो। बल्कि अच्छा तो यह होगा कि बिल्कुल ही बाहर न जाओ। यहाँ बाहर निकलना ही ख़तरनाक है। यहाँ का वातावरण दूषित है। यहाँ स्त्रियों को स्वतंत्रता बिल्कुल नहीं है। जब तक हम रवाना न हो जायँ, तुम हमेशा मेरे पास ही रहो, कोई बहुत लम्बा समय नहीं है। बोलो बाहर न जाओगी न ?"

"न जाऊँगी।"

"बहुत अच्छा बेटी!" बुड्ढे ने क्वचित कटुता मिश्रित मुस्कराहट के साथ कहा--"और अब मैं तुम्हें वह बात बतला दूँगा जो मैंने अभी तक गुप्त रक्खी थी। तुम्हारे दादा और मेरे बाप के दुश्मन अताउल्लाह के लड़के सदाउल्लाह ने तुम्हें कहीं देख लिया था। वह कुत्ता तुम्हें अपनी बेग़म बनाने का हौसला रखता है। वह समझता था कि मैं उसकी खानदानी अमीरी और शान के रोब में आजाऊँगा। वह मिलता तो मैं इन्हीं हाथों से उसका गला घोंट देता। मैंने उसका पैग़ाम लेकर आने वाले को धक्का देकर निकलवा दिया।"

"पर यह बात आपने मुझसे अब तक क्यों नहीं कही थी पिता जी ?" लड़की ने पूछा।

इसलिए कि मैं समझता था कि उसमें मुझे छेड़ने की हिम्मत नहीं है। इसके अतिरिक्त मैंने अंग्रेजों पर अत्यधिक विश्वास किया था। बुढ़ापे में सचमुच अक़्ल मारी जाती है। पर सब झगड़ों का उपाय यही है कि तुम यहाँ से प्रस्थान करने तक सदा

मेरे पास रहो। मैंने नहीं समझा था कि ऐसी घटना यहाँ अब भी अंग्रेजी राज्य का प्रकाश फैल जाने पर भी—घटित हो सकती है; इसीलिए पहले तुम्हें सावधान नहीं किया था।"

"तो क्या तुम्हारा यह खयाल है कि आज जिन आदमियों ने मुझे पकड़ा था वे सदाउल्लाह के ही आदमी थे और मुझे छुड़ा ले जाने का षड्यंत्र रच चुके थे?" रैशेल ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"मुझे सन्देह है कि वह गुण्डे उसीके भेजे हुए थे। शमसुद्दीन दिल्ली गया है। उसके आ जाने पर मैं उससे भी इस मामले में जाँच करके तब अन्तिम निश्चय पर पहुँच सकूँगा कि यह किसकी करतूत थी। हम एक मास में अमेरिका के लिए रवाना हो जायँगे तब तक तुम इस चहार दीवारी से बाहर न जाओ। यह स्थान सुरक्षित है।"

परन्तु सदाउल्लाह एक बार की असफलता से निराश होने वाला नहीं था। उसने अपने षड्यंत्र-जाल को विस्तृत करने का निश्चय कर लिया।

---

[४]

सदाउल्लाह का जीवन अब भूतपूर्व शासक-वंश वालों का सा न रहकर डाकू-लुटेरों का सा बन चुका था। वह अब भी यह धृष्टतापूर्ण आशा करता था कि कभी-न-कभी वह अंग्रेजों

को अपने प्रान्त से खदेड़कर स्वयं शासक बन सकेगा। वह टोलियाँ बनाकर धनाढ्यों पर डाके डालता, औरतों को उड़ाता और इस प्रकार अपने शासकोचित दर्प को सन्तुष्ट करता था। वह जब शहर में आता तो लोग उसका आदर करते; परन्तु प्रतिष्ठा के कारण नहीं; केवल भय-वश। इसीलिये उसकी बातों का किसी पर प्रभाव नहीं पड़ता था और अंग्रेज भी उसे कोई विशेष हानिकारक व्यक्ति नहीं समझते थे। अंग्रेजी राज्य में पेशावर के व्यापारियों को खास लाभ था। कम से कम वे लुटने से तो बचे हुए थे।

किन्तु नगर में विशेष प्रभाव न रखते हुए भी सदाउल्लाह पार्श्ववर्ती पहाड़ियों का अब भी राजा था। वहाँ जाकर कोई उसका कृपा पात्र बने बिना सुरक्षित नहीं लौट सकता था। एक दिन जब उसने उस बुर्के वाले शहर में बेपर्दगी के साथ रैशेल को गलियों में आज़ाद घूमते देखा था तो उसके कलेजे पर साँप लोटने लगा था। रैशेल को देखकर उसके मस्तिष्क पर जैसे किसी ने रेखा खींच दी कि वह उसके हरम में रखी जाने के लिए ही इस शहर में आयी है; पर स्त्री के रूप में नहीं सेविका के रूप में, क्योंकि वह ग़ैर-मुस्लिम है। उसका ख़याल था बुड्ढा यहूदी अपनी लड़की उसे देकर ख़ुश ही होगा, क्योंकि उसकी इज़्ज़त और आतंक इन इलाकों में शासन न रहने पर भी अभी तक क़ायम है।

यह सब सोचकर उसने बुड्ढे यहूदी इज़रा को बुलवा भेजा

था। किन्तु बुड्ढा उस सन्देश से प्रसन्न होने के बदले इतना कुपित हुआ कि वह चिल्ला उठा और उसने सदाउल्ला को गालियाँ सुना कर उसके सन्देश-वाहक को धक्का देकर निकलवा दिया था।

× × ×

सदाउल्ला इस घटना के बाद सोचने लगा कि किस प्रकार यहूदी को नीचा दिखाकर उसकी लड़की को उड़ाया जा सकता है। उसने अन्दाज़ा लगा लिया कि यहूदी की कोठी पर अधिक आदमी नहीं रहते, उसका एक ही घनिष्ट दोस्त शमसुद्दीन है जो बीच-बीच में दिल्ली चला जाया करता है। यदि उस पर आक्रमण किया जाय तो उसके पास रक्षा का काफ़ी साधन नहीं है; लेकिन अंग्रेज़ों के साथ उसका रब्त-ज़ब्त कहाँ तक है, इसका अनुमान वह नहीं लगा सका। वह सोचने लगा कि खुली लड़ाई न लड़कर यदि गुप्त रूप से लड़की को उड़ाया जा सके तो अधिक उत्तम होगा।

दूसरे ही दिन उसने लड़की को उड़ाने का कार्यक्रम बनाया था और वह अपनी चेष्टा में कृतकार्य भी हो जाता; पर दोनों फ़ौजी गोरों ने पहुँचकर काम बिगाड़ दिया।

इसके बाद उसने इज़रा के घर के चारों ओर अपने गुप्तचर बैठा दिये और उन्हें हिदायत कर दी कि ज्योंही लड़की बाहर निकले मौका पाकर उस पर टूट पड़ो और चालाकी के साथ बच कर उड़ा लाओ। पर राज-शासन की भाँति प्रेम-प्रसङ्ग

में भी सदाउल्ला अभागा था। लड़की उस दिन से बाहर नहीं निकली। यही नहीं, एक नयी कठिनाई उसके मार्ग में आ गयी क्योंकि गोरी फौज का एडजुटेण्ट ह्यूज जो उन दिनों पेशावर छावनी की एक टुकड़ी का अफ़सर था, उसका प्रतिद्वन्दी साबित हुआ। ह्यूज एक सुन्दर जवान था और उसे अपनी सुन्दरता का घमण्ड था। गठीले बदन, औसत क़द नुकीली मूँछों और सभी सैनिकोचित रंग-ढङ्ग के साथ वह काफ़ी रोबीला मालूम होता था। चलता तो इस प्रकार अकड़कर कि देखने वाला दङ्ग रह जाता।

जिस समय पहले-पहल एडजुटेण्ट ह्यूज को दो सैनिकों द्वारा एक यहूदी लड़की के उद्धार का सम्वाद मिला तो वह अपनी मूँछें ऐंठते हुए बोला—"रहने दो, यहूदी छोकरियों की चर्चा मेरे सामने न करो। महा मूर्खा होती हैं। चाहे उनका रङ्ग भले ही गोरा हो, और पोशाक भी भले ही यूरोपियन ढङ्ग की पहनें, पर हैं वे सब की सब गधी या फिर तुम्हीं लोग अन्धे हो।"

"लेकिन वह लड़की वैसी नहीं है।" सैनिक हैरिस ने कहा—"उसका रङ्ग-ढङ्ग बिल्कुल जुदा है।"

"चुप भी रहो" एडजुटेण्ट ने कहा—"तुमने अभी ख़ूबसूरत लड़कियाँ देखी ही कहाँ हैं। तुम्हें नौकरी पर आये अभी जुम्मा-जुम्मा आठ ही रोज़ तो हुए हैं।"

"ठीक है हुज़ूर," विलियम ने कहा—"आपका फ़र्माना बिल्कुल बजा है।"

बात यहीं समाप्त हो गयी, क्योंकि ह्यूज उन आदमियों में से था जो किसी और की जल्दी नहीं सुना करते, हाँ, अपने आप चाहे भले ही विचार बदल दें। हुआ भी ऐसा ही। एक दिन अकस्मात् वह शहर के उत्तरी भाग में घूमने गया। उस दिन सैनिकों की तनख़ाह बँटी थी। ऐसे दिनों पर वह इधर-उधर घूमकर सैनिकों की तफ़रीह का ढङ्ग देखा करता था और किसी न किसी को कर्त्तव्य-पालन के विरुद्ध कार्य करते देख अभियुक्त क़रार दे देता था।

एडजुटेण्ट ह्यूज अनुशासन में विश्वास करता था और उसका पालन बड़ी कठोरता से कराता था। वह रहम और माफ़ी का नाम नहीं जानता था। यदि वह किसी भी सैनिक को देखता कि उसके कोट का ऊपरी बटन नहीं लगा है तो उसे दण्ड दिये बिना नहीं छोड़ता था। उसके द्वारा सज़ा पाये और सताये हुए कुछ सैनिकों को उसे खिजाने में मज़ा आता था और वे उसकी आज्ञा का उल्लंघन कभी-कभी निश्शंक होकर किया करते थे। एडजुटेण्ट से सभी डरते और घृणा करते थे। छः मास से पेशावर छावनी में काम करते हुए भी जो वह किसी बिगड़े दिल सैनिक के क्रोध का शिकार नहीं हुआ इसका कारण उसका सुप्रबन्ध नहीं बल्कि उसका भाग्य ही समझना चाहिए।

उस दिन तीसरे पहर वह देर तक फिरा; पर उसे कोई भी

हुक्म-उदूली करने वाला नहीं मिला। घूमते-फिरते उसे प्यास लग गयी थी। वह बिना कोई शिकार प्राप्त किये प्यासा और थका-माँदा होने के कारण लौट जाना चाहता था कि उसी समय उसकी नज़र सड़क पर तेज़ी से जाती हुई यहूदी की लड़की पर पड़ी। वह एक संकीर्ण रास्ते के कोने में छाया में खड़ा हुआ था जहाँ जल्दी किसी की नज़र न जाती; पर वह वहाँ से सबको देख सकता था। उसने रैशेल को देखा तो क्षण भर के लिए अवाक् और स्तब्ध-सा रह गया। उसे अब मालूम हुआ कि हैरिस ने झूठ नहीं कहा था। क्षण भर के लिए ह्यूज हिचकिचाया फिर उसने झटपट अपने कर्त्तव्य का निश्चय कर लिया। ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिला करता जो योंही खो दिया जाय। उसे सदा सभी मामलों में विजय ही मिलती आयी है अतः ऐसे शुभावसर पर वह चूकने वाला व्यक्ति नहीं था। बड़े-बड़े मौक़ों पर वह अपनी मीठी बातों से ही बाज़ी मार चुका है; फिर एक यहूदी छोकरी को राज़ी करना कौन-सी बड़ी बात है। उसका हाथ बरबस उसकी मूँछों पर चला गया। उसने अपनी नुकीली मूँछों को और भी ऊपर उठाने की कोशिश की और कपड़ों पर हाथ फेरते हुए अकड़ कर अपने को उस अनोखी कोमल बालिका से परिचय के लिए प्रस्तुत किया।

किन्तु ज्योंही ह्यूज छाया से निकलने लगा उसने देखा कि हैरिस और विलियम दोनों उस लड़की के पीछे-पीछे जा रहे हैं। उसको निश्चय हो गया कि वे दोनों यहूदी लड़की का पीछा

कर रहे हैं। अनुशासन भंग करने में सर्वाग्रगण्य थे दोनों युवक सैनिक उसकी पसन्द की हुई लड़की का पीछा करने की धृष्टता कर रहे हैं और वह भी ठीक उस मौक़े पर जब एडजुटेण्ट साहब उस लड़की को अपना परिचय देने जा रहे थे, इन दोनों का बीच में कूद पड़ना बदमाशी नहीं तो और क्या थी। विलियम के कोट के ऊपरी बटन नहीं लगे थे और वह बिल्कुल अस्त-व्यस्त-सा होकर आगे बढ़ रहा था, हैरिस के चेहरे से भी कामुकता-जन्य लोलुपता टपक रही थी।

एडजुटेण्ट को इसी समय उन बातों का स्मरण हो आया जो उसने यहूदी लड़की रैशेल के बारे, में सुनी थीं। वह गोरी है, धनाढ्य बाप की बेटी है, सुशिक्षिता है—यही नहीं प्यानों भी बजाती है। फिर भी ऐसी सुसंस्कृत लड़की के पीछे दो अक्खड़, गँवार अशिक्षित और शिष्टाचार-ज्ञान-विहीन फौजी सिपाही लगे हैं। ऐसी कड़ी धूप में जो लड़की इतनी तेजी से भागी जारही है इसका तो यह स्पष्ट अर्थ है कि ये दोनों उसे पकड़ना चाहते हैं।

एडजुटेण्ट ह्यूज मुस्कराया। उसने दोनों सिपाहियों को और भी अधिक फँसने का मौक़ा दिया और उन्हें फौजी कानून का शिकार बनाने की बात सोचने लगा। वह चुपचाप सड़क पर आगया और गुप्त रूप में दोनों का पीछा करने लगा। वह प्रति क्षण यही आशा कर रहा था कि अब विलियम आवाज देकर लड़की को रोकता है, किन्तु चलते-चलते सड़क के अन्त

तक पहुँच जाने पर भी दोनों सैनिक रैशेल के दस क़दम पीछे ही रहे। रैशेल अब पहाड़ी पर स्थित अपने बाप की कोठी के दरवाज़े पर पहुँच गयी। निराशा और पश्चात्ताप से एडजुटेण्ट ह्यूज कुछ क्रुद्ध-सा हो उठा—उसने अपना इतना समय इस उपहासास्पद रीति से व्यर्थ ही खो दिया।

रैशेल दरवाज़े के अन्दर घुसी तो दोनों सैनिक ठिठक गये, परन्तु ह्यूज आगे बढ़ा और दोनों को घुड़ककर बोला—"तुम दोनों गिरफ्तार किये जाते हो।"

विलियम और हैरिस के पाँव के नीचे से जैसे ज़मीन खिसक गयी हो; परन्तु अपनी फ़ौजी क्रिया में सिद्धहस्त होने के कारण दोनों ने कपड़े वग़ैरह सँभाले और फिर अपने अफ़सर के सामने बाक़ायदा खड़े होगये।

"मैंने तुम दोनों को देखा है," एडजुटेण्ट ह्यूज ने आँखें लाल-लाल करके कहा—"मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आया हूँ। मैं तुम्हारे गन्दे हाथ किसी प्रतिष्ठित महिला पर नहीं पड़ने दूँगा और इसकी कोशिश के लिए तुम दोनों को दस-दस दिन क़ैद में रखा जायगा जिससे तुम लोग शिष्टाचार का मूल्य समझ सको। तुम दोनों सुअरों से क्या इस शहर में कोई भी सुरक्षित नहीं रह पायेगा?"

"हम तो उसकी रक्षा कर रहे थे," विलियम ने कहा—"उस पर हमला हुआ था।"

"झूठा कहीं का," ह्यूज साहब ने पूरे अविश्वास के साथ धमकाते हुए कहा—"जवाब देता है? बातें बनाता है? तुम दोनों अपने कोट की ओर तो देखो—ये ख़ून के छींटे कहाँ से आये। तुम दोनों शराब के नशे में कहीं नाली में पड़े रहे होंगे। दोनों को पाँच दिन की अतिरिक्त क़वायद करनी पड़ेगी जिससे तुम्हारी यह आदत छूटे। फ़ौरन बैरेक को वापस जाओ—अबाउट टर्न—मार्च!"

[५]

दो सप्ताह तक विलियम और हैरिस को यह सज़ा मिली कि उन्हें खाने को सिर्फ़ रोटी और पीने को सादा पानी दिया गया और तंग कोठरियों में बन्द रखा गया। तंग कोठरियों की गर्मी और एडजुटेंट के क्रोध के मारे दोनों का बुरा हाल था। शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की यंत्रणाओं ने उन्हें परेशान कर डाला। शुरू में तो उन्हें अतिरिक्त क़वायद की ही सज़ा दी गयी, पर ज्यों ज्यों ह्यूज के क्रोध का पारा ऊपर चढ़ता गया और उसे यहूदी लड़की की स्मृति सताने लगी, यह उन्हें और अधिक यंत्रणा दिलाने लगा।

एक दिन जब दोनों को अतिरिक्त क़वायद के लिए बाध्य किया जारहा था, एडजुटेंट ह्यूज ने निकट आकर हँसते हुए

कहा—"मैं तुम दोनों का कितना ख्याल रखता हूँ" तुम्हें गर्मी पहुँचाने का पूरा ध्यान रखता हूँ। जिन पैरों से तुमने उस लड़की का पीछा किया था आज मैं उन्हें जकड़वा दूँगा।"

ह्यूज ने अपनी बात पूरी करके छोड़ी और दोनों को असह्य यंत्रणा भोगनी पड़ी जिस दिन उसेने इन दोनों को सज़ा दी उसके दूसरे ही दिन उसने बूढ़े यहूदी इज़रा की कोठी पर जाकर आदर-प्रदर्शन किया और अपने सिपाहियों के दुर्व्यवहार के लिए माफ़ी माँगी।

"देखिए, हम सैनिक ज़रूरत पर उद्दण्डता और अक्खड़पन दिखा सकते हैं," उसने इज़रा से कहा—"लेकिन हम नम्रता और सज्जनता का मूल्य भी समझते हैं और ज़रूरत पड़ने पर मित्रता भी निभा सकते हैं, और आदमी पहचानते हैं। आपकी सज्जनता की दो-एक बातें सुनकर ही मैं सीधे आपकी कोठी पर आने का साहस कर सका हूँ।"

इस प्रकार लम्बी-चौड़ी भूमिका बांधने के पश्चात् अन्त में ह्यूज साहब ने इज़रा से कहा कि वह उसकी लड़की से परिचय प्राप्त करके प्रसन्न होंगे।

किन्तु बेन इज़रा ह्यूज की शक्ल देखते ही क्रोध से जल उठा था और उसने उसकी भूमिका की बातों पर ध्यान न देकर केवल अन्तिम अनुरोध को ही ध्यान से सुना। उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि चाहे उसकी लड़की मर भले ही जाय; पर वह उसे असभ्य सैनिकों के सम्पर्क में न आने देगा।

किन्तु बेन इज़रा की उदासीनता भी ह्यू ज की आँखें न खोल सकीं। आज वह कितनी शान से बढ़िया वर्दी पहनकर मूँछें ऐंठ कर अकड़ते हुए बूढ़े यहूदी के घर अपनी शान जमाने आया था। शराब भी रोज की अपेक्षा आज अधिक पी थी। उसे सफलता की पूरी आशा थी, आत्म-विश्वास था कि वह यहूदी को क्षण भर में राजी करले सकता है—और एक बार यहूदी को अनुकूल कर लेने पर उसकी लड़की से मेल बढ़ाना कठिन नहीं होगा। और फिर जब वह वास्तव में सुन्दरी और सुसंस्कृत है तो उसे स्वीकार कर लेने में हर्ज ही क्या है।...

लेकिन यहूदी की रुखाई ने जैसे उसकी मोह-निद्रा भंग कर दी। यहूदी के रंग-ढंग वैसे नहीं दीखे जैसे की आशा करके वह आया था। कम-से-कम उसकी फ़ौजी वर्दी का तो उसपर प्रभाव पड़ना चाहिए था। पर यहूदी की कोठी की सजावट, उसकी वेश-भूषा और सरोसामान देखकर ह्यू ज को मालूम हुआ कि वह वैसा यहूदी नहीं है जैसे उसने भारत में देखे थे। वास्तव में ह्यू ज खुद इज़रा की सम्पन्नता के रोब में आगया।

"क्यों, आप चाहते क्या हैं?" बुड्ढे ने कठोर स्वर में पूछा।

"मैं—मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि आप अपनी लड़की की शादी मुझसे—" ह्यू ज ने कुछ हिचकिचाहट के साथ अपने सैनिक अक्खड़पन को प्रकट करते हुए कहा।

"और मैं कहता हूँ कि आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं," बुड्ढे ने चिढ़कर जवाब दिया—"मेरी लड़की की शादी फौजी आदमी से नहीं हो सकती। वह तो आपको देखना भी नहीं चाहेगी। आपका इस प्रकार मेरी कोठी पर आजाना अनुचित है। समझ में आयी बात ?"

"देखिये, अगर ज़बान सँभाल कर न बात की तो मैं क़ैद-खाने की हवा खिला दूँगा। इस बेवकूफ़ी भरी बातों के लिये आपको माफ़ी माँगना पड़ेगा ?"

"मैं माफ़ी माँगने वाले यहूदियों में नहीं हूँ—मैं अमेरिकन नागरिक हूँ। और अगर आप फ़ौरन यहाँ से चुपचाप नहीं चले जाते तो मालूम हो जायगा कि अमेरिकन नागरिक के साथ हिन्दुस्तानी गुलामों का-सा व्यवहार करने का क्या नतीजा होता है।"

ह्यूज का जैसे दम निकल गया। वह अमेरिकन नागरिक को छेड़ने और सताने के कुपरिणामों से परिचित था। उसने यह भी सोचा कि कोई मामूली आदमी उस-जैसे सैनिक अफ़सर की वर्दी देखकर भी ऐसा व्यवहार नहीं कर सकता। वह कुछ और कहना चाहता था, पर उसी समय बुड्ढे ने जेब से अपना 'पासपोर्ट' निकाल कर दिखाते हुए कहा—"शक हो तो देख लीजिये, मैं न्यूयार्क के प्रसिद्ध जौहरी फ़र्म का मालिक हूँ।" पासपोर्ट देखकर ह्यूज का अवशिष्ट सन्देह भी जाता रहा। वह चुपचाप वहाँ से खिसक कर कोठी से बाहर होगया।

× × ×

वैसे तो एडजुटेंट ह्यूज सेनावास में आकर अपने दैनिक कार्य में लग गया; पर उसका मन एक अज्ञात वेदना से तड़पने लगा। जितना ही वह उस लड़की के बारे में सोचने लगा उसकी आसक्ति अधिकाधिक बढ़ने लगी। उसका सुख-स्वप्न भंग होगया। बुड्ढा यहूदी बड़ा खुर्राट मालूम होता है। कहीं उसने जाली पास पोर्ट तो नहीं बना लिया। कुछ भी हो, उसे विश्वास था कि अगर वह रैशेल से पाँच मिनट भी बात कर सके तो मामला सुधर सकता है—वह मुग्ध होकर उसकी बाँहों में लिपट जा सकती है। क्यों नहीं? उसमें सुन्दरता है, शरीर सुगठित है, ओहदा भी मामूली नहीं है—पन्द्रह साल की नौकरी और तीन तमगे भी कुछ वक़त रखते हैं। वह स्त्रियों से बातें करना भी जानता है। कोई कारण नहीं है कि वह लड़की उसकी ओर आकर्षित न हो—बुड्ढा बदमाश है; शायद कोई धनाढ्य व्यापारी उसे अधिक पसन्द आये; पर लड़की बेचारी का क्या क़सूर। उसने तो मुझे देखा भी नहीं। उसके सम्बन्ध में कोई विपरीत कल्पना करना अन्याय ही होगा।

यह भावना एडजुटेण्ट ह्यूज को इतनी अधिक सताने लगी कि वह बोतलों पर बोतलें शराब पीकर उसे भूलने की कोशिश करने लगा। गर्मी और शराब के नशे से उसका दिमाग़ चक्कर खाने लग। वह क्रोधाधिक्य के कारण सैनिकों से और भी क्रूरता पूर्ण बर्ताव करने लगा। उसे जब समय मिलता तो उसके पैर बरबस उसे यहूदी की कोठी की ओर घसीट ले

जाते और वह बाहर किसी कोने में खड़े रहकर यह प्रतीक्षा करता कि शायद लड़की बाहर निकले और वह उससे कुछ बातें कर सके।

ह्यूज की उपस्थिति से सदाउल्लाह के षड्यंत्र में बाधा पड़ने लगी क्योंकि वह और उसके आदमी इस ताक में थे कि लड़की बाहर निकले तो उसे उड़ा लिया जाय, या बूढ़ा बाहर निकले तो उसे जान से मार दिया जाय।

दिन महीनों की तरह बीतने लगे। सारे पेशावर में खबर फैल गयी कि बेन इज्रारा शहर छोड़ जाने की तैयारी कर रहा है और वह फिर उसी देश को लौटा जारहा है जहाँ सोना बरसता है और जहाँ यहूदियों को भी धन एकत्रित करने का उतना ही अधिकार है जितना औरों को, जहाँ स्त्रियां तितली की तरह स्वतंत्र उड़ती फिरती हैं और जहाँ संसार भर का वैभव केन्द्रीभूत है। अन्त में शहर में यह अफ़वाह उड़ी कि दूसरे ही दिन यहूदी ने अपना सामान लादने के लिए ऊँट मँगा रक्खे हैं। ह्यूज साहब की निराशा की कोई हद नहीं रही। सदाउल्लाह तो क्रोध से पागल हो उठा। एक यहूदी उसे इस तरह चकमा देकर निकल जायगा। यहूदी भी वह जो उसके बाप का गुलाम रहा हो। असम्भव! वह ऐसी बात कदापि नहीं सह सकता। यहूदी की जाने की तैयारी का समाचार सुनकर ह्यूज ने विलियम और हैरिस को दण्ड से मुक्त कर दिया जिसके कारण उन बेचारों को अनायास दण्ड भोगना पड़ा,

वह तो जा ही रही है, फिर उन्हें हैरान करने से फ़ायदा ! दोनों मुक्त हुए। सैनिकों में कष्ट शीघ्र भूल जाने की अद्भुत क्षमता और आदत होती है। या तो वे जान दे देते हैं या फिर जीवित रहने के लिए कष्ट भूल जाते हैं। विलियम और हैरिस का भी यही हाल हुआ।

"चलो आज दुहरी बोतलें चढ़ाकर तंग कोठरियों की तकलीफ़ बहा दें।" विलियम ने हैरिस से कहा।

"किसलिए ?" हैरिस ने कहा—"पीकर फिर भी हमारी वही दुर्गति होगी, पकड़े जायँगे और फिर इन्हीं तंग कोठरियों में बन्द होना पड़ेगा। यह तो कोई अच्छी बात नहीं होगी।"

"नहीं, हमें इस कष्ट को भुलाने के लिए एक बार तो ह्विस्की की शरण लेनी ही पड़ेगी।" कहकर विलियम चलने को तैयार हुआ।

हैरिस भी अफ़सोस के साथ सिर झुकाये उसके पीछे हो लिया।

"तुम फिर आफ़त बुलाओगे।" हैरिस ने बैरक से कुछ दूर जाने के बाद कहा।

"मैं ! मैं आफ़त बुलाऊँगा। मैं तो स्वर्ग की सृष्टि किया करता हूँ। मेरा तो पक्का विश्वास है कि अगर पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो वह बाहर नहीं बोतलों के भीतर रहता है।" विलियम ने कहा।

दोनों एक अच्छी शराब की दुकान की ओर जाने के लिए शहर की गलियों में होकर आगे बढ़े। रविवार का दिन था और दिन के दस बज चुके थे। धूप के मारे दोनों सैनिकों का बुरा हाल था। बेचारे हाँप रहे थे।

हैरिस ने अपने कोट का हुक खोलने का प्रयत्न किया, परन्तु विलियम ने उसे रोकते हुए कहा—"ढीले मत पड़ो। एडजुटेंट सुबह से ही इधर आया हुआ है। कहीं देख लेगा तो हम लोगों की खैर नहीं। लेकिन मैं तो समझता हूँ कि इस बार मिलने पर अगर बुरी तरह पेश आये तो हमें उसका कचूमर निकाल देना चाहिए। मैं तो तंग आगया।"

"मैं भी" हैरिस ने कहा—"पर हम लोग अब चल किधर रहे हैं। बड़ी कड़ी धूप है—अब तो जरा दम ले लेना चाहिए।"

"नहीं, अब तो उस 'बार' तक पहुँचकर ही दम लेना चाहिए। एक बोतल चढ़ाते ही तबियत बाग़-बाग़ हो जायगी।"

परन्तु दोनों ने अभी क़दम आगे नहीं बढ़ाया था कि किसी ने पीछे से आकर कहा—"माफ़ कीजिएगा; लेकिन आप अंग्रेज़ हैं न! इसीलिए मैं आप से बातें करना चाहता हूँ।"

विलियम ने घूम कर पीछे देखा तो बेन इज़रा खड़ा था। उसका चेहरा पीला पड़ रहा था और हाथ हिल रहे थे।

"क्यों, बात क्या है? आप घबड़ाये से क्यों हैं?" विलियम ने पूछा।

इज़रा की ज़बान खुलने में कुछ क्षण लग गये। जैसे वह अपने हृदय की बात खींचकर बाहर निकाल रहा हो।

"मैं—मैं अमेरिकन हूँ," अन्ततः उसने कहा—मैं आपकी मदद चाहता हूँ। मेरा पीछा बदमाश कर रहे हैं।" और अपनी हिलती उँगली से सड़क के ऊपरी भाग पर स्थित पहाड़ी की ओर इशारा किया—"वे लोग मुझे क़त्ल कर देना चाहते हैं। मैं आज कुछ इन्तज़ाम करने कोठी से बाहर निकला था, राह में ये बदमाश पीछे लग गये। आपने सुना होगा, मैं पेशावर सदा के लिए छोड़ कर जा रहा हूँ।"

"आप सीधे चले जाइए। कोई डर नहीं। हमें प्यारा बाज़ार की तरफ़ जाना है।" विलियम ने कहा।

"नहीं; अगर वे मुझे पकड़ पायेंगे तो जान से मार देंगे," इज़रा ने काँपते हुए विलियम का हाथ पकड़ कर कहा—"मेरी लड़की को भी ये बदमाश पकड़ ले जायँगे। मैंने कोठी से बाहर अकेले निकल कर ग़लती की है। अब वापस जाना मुश्किल है। आप लोगों की आवाज़ सुनी तो जान में जान आयी। आपके साथ मैं सुरक्षित हूँ।" यहूदी ने कहा।

"अच्छा, आप उस लड़की के पिता हैं?" विलियम ने अपनी उपेक्षा को जारी रखते हुए कहा।

"हाँ, उस लड़की का पिता हूँ! पेशावर में अब आप ही ऐसे व्यक्ति हैं जिन पर मैं विश्वास कर सकता हूँ।" यहूदी ने

अत्यन्त विनम्र भाव से कहा—"मुझे मेरी कोठी तक पहुँचाने की कृपा कीजिए। फिर वहाँ कुछ खा पीकर चाहे जहाँ जइएगा। मेरे पास अमेरिका की बढ़िया शैम्पेन* है। उसे पीकर ज़रा थकावट दूर कीजिएगा।"

"नहीं," हैरिस ने कहा—"नहीं, अब हम लोग किसी के बचाने का काम नहीं करेंगे। एक बार एक व्यक्ति को बचाकर पन्द्रह दिन महान् कष्ट भोग चुके हैं। आज ही तो हम लोग काल-कोठरी से निकले हैं। फिर वही बेवकूफी करें आपकी लड़की को बचाया तो उसने विलियम के गाल पर थप्पड़ मारा, अब आपको बचायें तो दूसरा गाल तैयार रखना पड़ेगा। नहीं बाबा, हम लोगों से यह काम अब न होगा।"

"मेरी लड़की ने मुझे वह क़िस्सा सुनाया था," यहूदी ने हैरिस की ओर स्निग्ध नेत्रों से देख कर कहा—"वह आप लोगों की कृतज्ञ है। वह आज आप लोगों को स्वयं धन्यवाद देगी। मैं बुड्ढा हूँ आपसे मदद माँग रहा हूँ। बदमाश उस तरफ़ कोने में छिपे हैं। आप यहाँ से हटे कि उन्होंने मेरा काम तमाम किया।"

"अच्छा," विलियम ने कहा—"हमारे साथ आइये, क्यों हैरिस?"

"मुझे तो बैरेक से बाहर निकलना खुराफ़ात ही मालूम होता

---

* उत्कृष्टतम प्रकार की मदिरा।

है," हैरिस ने कहा—"पर यहाँ तक आ गये हैं तो ख़ैर इनकी कोठी तक चले चलो।"

"मैं आप दोनों का परम कृतज्ञ हूँ।" यहूदी ने कहा—"मैं कोठी पर पहुँच कर ही आपके प्रति पूरी कृतज्ञता प्रकट कर सकता हूँ। आप चलिए तो सही।"

दोनों सैनिक यहूदी को बीच में करके आगे बढ़े और कुछ ही मिनटों में कोठी के निकट पहुँच गये। ज्यों-ज्यों कोठी का दरवाजा निकट आता था यहूदी के पीले चेहरे पर कुछ-कुछ लालिमा बढ़ती जा रही थी। अन्ततः जब तीनों फाटक पर गये और दरवाजे के अन्दर घुसे तो इजरा ने गहरी साँसली। रास्ते में पग-पग पर उसे यही मालूम होता था कि कोई न कोई उसे मारने के लिए दौड़ा आरहा है। रास्ते में दोनों सैनिकों ने भी बहुत दूर सड़क के मोड़ पर एक सफेद वर्दी वाले आदमी को देखा, पर वहाँ उसकी चर्चा न कर दरवाजे के अन्दर घुसने पर हैरिस ने कहा—"वह आदमी एडजुटेंट तो नहीं था।"

विलियम—मालूम तो वैसा ही होता था।"

यहूदी—"कौन एडजुटेंट! वही आपकी सेना का। बड़ा भयानक आदमी है।"

विलियम—"भयानक नहीं, महाभयानक! पर अब आप जाकर आराम कीजिए। हम लोग चले जायँगे।

परन्तु इजरा अकृतज्ञ नहीं था। वह जानता था कि अंग्रेज़ जाति में क्या क्या गुण होते हैं। काम निकल जाने पर उपेक्षा

प्रदर्शित करना उसका स्वभाव नहीं था। उसका हृदय कृतज्ञता से गदगद हो रहा था। वह आज इन सैनिक द्वय को अपने घर का सारा आनन्द देने को आतुर हो रहा था। उसने विलियम का हाथ पकड़कर कहा—भला ऐसा भी कहीं हो सकता है। आपने हमारी जान बचायी और अब आप ऐसे ही चले जायँगे।"

यहूदी दोनों सैनिकों को अन्दर ले गया। आराम से बैठाकर दोनों के सामने ठंडी शैम्पेन की गिलास रखी। और अपनी लड़की को बुलाया। रैशेल ने आते ही पहचान लिया कि वे दोनों वही हैं जिन्होंने दो सप्ताह पूर्व उसकी रक्षा असभ्य मुसलमानों से की थी। उसने बड़े तपाक और शिष्टाचार के साथ दोनों का स्वागत किया।

स्वागत तो किया; पर सच पूछिए तो इन सैनिकों की उपस्थिति से उसे कोई हार्दिक आनन्द नहीं हुआ। उसने नम्रता प्रदर्शित की, क्योंकि वह इसकी अभ्यस्त थी और उसके हृदय में शिष्टाचार तथा कृतज्ञता के भाव मौजूद थे; परन्तु रूखे और अशिक्षित सैनिकों की उपस्थिति से उसके हृदय में जो भाव उत्पन्न हुए वह चेहरे पर प्रकट हुए बिना न रह सके।

"इन्होंने मेरी जान बचायी है, बेटी!" इज़रा ने रैशेल के उपेक्षा-भाव को ताड़ते हुए शीघ्रता पूर्वक कहा।

"तुम्हारी जान।" रैशेल ने कुछ आश्चर्य पूर्वक पूछा।

"हाँ आज बदमाशों से मुझे बचाया है। इस समय ये हमारे साथ भोजन करेंगे। इनसे बड़ा विश्वासपात्र हमारा कौन होगा।" बुड्ढे ने कहा।

"सचमुच।" लड़की ने कहा—"पर सब बढ़िया सामान तो बँध चुका है—लेकिन कुछ न कुछ करना ही होगा। माफ़ कीजिए, अभी आती हूँ।"

मानव-भावना को सहज ही न ताड़ सकने वाले दोनों सैनिक रैशेल का घृणा पूर्ण मनोभाव पूर्णतः भाँप नहीं सके। और सच्ची बात तो यह थी कि वे दोनों इस समय रैशेल के मनोभाव की ओर ध्यान देने की अपेक्षा गिलास की शैम्पेन की ओर अधिक आकृष्ट हो रहे थे। रैशेल के चले जाने पर जब दोनों अपनी अपनी गिलासें खाली कर चुके तो उन्होंने मुँह फाड़-फाड़ कर आश्चर्यपूर्वक इज़रा के मुँह से न्यूयार्क नगर का वर्णन सुना।

अन्त में रैशेल भोजन का प्रबन्ध करके यहाँ आ पहुँची और इच्छा या अनिच्छा से बरामदे के बाहर वृक्ष की सघन छाया में मेज़ पर चारों व्यक्तियों के लिए भोजन परोस कर तीनों को वहाँ लिवा ले गयी। भोजन के समय बुड्ढा अपने जीवन में सैनिकों द्वारा प्राप्त उपकारों का वर्णन करता रहा और रैशेल ने यह बताया कि अमेरिका पहुँचकर वह क्या-क्या करना चाहती है। सैनिकों को इन दोनों ही बातों में दिलचस्पी नहीं थी, परन्तु यहूदी के महँगे भोजन में उन्हें जो आनन्द

आरहा था वह जीवन में कभी पहले नसीब नहीं हुआ था। चारों ही व्यक्ति भोजन के आनन्द में मस्त होकर झूम रहे थे। इसी समय शमसुद्दीन नामक एक नौकर ने भयपूर्वक भागते हुए आकर यहूदी से कहा कि एडजुटेंट फाटक पर खड़ा है और मुलाकात करना चाहता है।

"वही एडजुटेंट!" यहूदी ने कहा—"वह बहुत परेशान करता है हम लोगों को। कोई भला आदमी नहीं है।".

"आप उसे अन्दर न आने दीजिए" हैरिस ने मुँह का निवाला जल्दी से निगलते हुए कहा।

परन्तु एडजुटेंट ऐसा आदमी न था जो रोकने पर रुकता। आज कई दिनों से वह जिसको देखने की प्रबल उत्सुकता को मन ही मन दबा रहा था और शराब की बोतलों पर बोतलें चढ़ाकर मस्तिष्क को बहला रहा था, उसके इतने निकट आकर वह नौकर के कहने पर, दरवाजे पर रुकने वाला कब था। वह पूरे वेग के साथ पैर पटकते हुए अन्दर प्रविष्ट हुआ। शराब के नशे के साथ धूप में चलने पर उसका चेहरा और भी लाल हो रहा था।

बरामदे में आकर वह किसी के स्वागत की प्रतीक्षा किये बिना एक खाली कुर्सी पर मचमचाकर बैठ गया। रैशेल के मुँह से उसे देखते ही एक चीख निकल गयी। एडजुटेंट ने तेज और रूखी हँसी हँसकर दोनों सिपाहियों की ओर मुँह करके कहा—'अच्छा, आखिर तुम दोनों सुअर आगए हाथ!

मैं देरी से तुम्हारा पीछा कर रहा था। यह यहूदी तुम्हें अन्दर लिवा लाया है न ?"

"तू झूठा है !" इजरा ने कहा—"जंगली सैनिक, मैं तुझे धक्का देकर निकलवा दूँगा, नहीं तो सीधे निकल जा मेरे घर से।"

"अच्छा ! तू मुझे निकलवायेगा, तुझे मालूम नहीं है कि पेशावर छावनी का सैनिक अधिकारी मैं हूँ। मुझे अपने सिपाहियों पर निगाह रखने का अधिकार है। अगर तू ज्यादा अकड़ेगा तो मैं तुझे जेलकी हवा खिला कर छोड़ूँगा। "कह कर एडजुटेंट ने विलियम और हैरिस की ओर रुख करके कहा—"चलो सुअरो, अटेंशन इस बार तुम्हें चार हफ्ते की काल-कोठरी भोगनी पड़ेगी।"

दोनों सिपाही धीरे-धीरे कुर्सी से उठे। एडजुटेंट के चेहरे पर कठोरता की मात्रा कुछ कम हुई। वह बोला—"तुम्हारे रँग-ढँग मैं देख रहा हूँ। ऐसी लड़की मामूली सिपाहियों के काम की नहीं हुआ करती। तुम दोनों ने आखिर अपने को समझ क्या रक्खा है। जिस चीज़ पर मेरी नजर हो उधर आँख उठाने का साहस तुम किस बूते पर करते हो ? पर तुम-जैसे बदमाशों द्वारा छेड़े जा चुकने पर यह अब मेरे-योग्य नहीं रही ! आखिर मैं पेशावर का उच्च सैनिक अफसर हूँ, इस बात का ख्याल तुम्हें और इसे सबको रखना चाहिए था।" इसके बाद उसने रैशेल की ओर निर्लज्जता पूर्वक मुड़कर कहा—

"बड़ी डरपोक छोकरी निकली तुम तो। आख़िर, भय किस बात का है। मेरी ओर देखो। क़रीब आकर ज़रा मुझे एक चुम्बन दो।"

"दुष्ट जंगली! मैं तेरे ख़िलाफ़ क़ानूनी कार्यवाही करूँगा। निकल मेरे घर से।"

एडजुटेंट ने कुर्सी से उठ कर रैशेल की ओर क़दम बढ़ाया। रैशेल अपनी जगह पर उसकी ओर क्रोधपूर्वक देख रही थी।

"यहाँ अफ़सरी नहीं चलेगी," अन्ततः विलियम ने गरजकर कहा—"अगर तुम उसकी ओर बढ़े तो अपनी ख़ैर न समझना।"

विलियम की आवाज़ इतनी संजीदा और चेहरे का भाव ऐसा गम्भीर था कि एडजुटेंट का क़दम अपने आप रुक गया।

"क्या तुम मुझे धमकी दे रहे हो?" उसने विलियम से आश्चर्यपूर्वक कहा।

"जो भी समझो! लेकिन मैं जो कह रहा हूँ, वह ठीक कह रहा हूँ।" विलियम ने कहा।

एडजुटेंट ने बायें हाथ से कोट का हुक ढीला किया और उसी क्षण वह दाहिना हाथ रिवाल्वर की ओर ले गया।

"हाथ हिलाया तो मैं तुम्हारा ढेर कर दूँगा। उसने विलियम से कहा—"सीधे खड़े हो। मैं इस यहूदी को अभी ठिकाने लगाता हूँ और इसकी लड़की को भी राह पर लाता हूँ" और फिर रैशेल की ओर देखकर बोला—"तुम्हें मुझसे प्रेम करना ही

पड़ेगा। तुम्हारी इच्छा हो या नहीं, पर एक चुम्बन तो देना ही पड़ेगा। मैं तुम्हारे पीछे कब से लगा हूँ और तुम दो कौड़ी के सिपाहियों से प्रेम करती हो। ये तुम्हारी मदद किस हैसियत से कर सकते हैं। बिना मेरे हुक्म ये अपनी जगह से हिल भी नहीं सकते।"

एडजुटेंट रैशेल की ओर तीन क़दम बढ़ा और उसने जोर से उसकी कलाई पकड़ ली। रैशेल पीछे हटी और कलाई छुड़ाने का भरसक प्रयत्न करने लगी। यह देखकर क्षण-भर के अन्दर विलियम और हैरिस एडजुटेंट पर टूट पड़े।

एडजुटेंट ने अपना हाथ रिवाल्वर की ओर बढ़ाने की कोशिश की; परन्तु दोनों सिपाहियों ने उसके दोनों हाथ जकड़ दिये। विलियम ने पूरे जोर से एक जमा हुआ घूँसा एडजुटेंट के मुँह पर मारा। क्षण-भर के लिए एडजुटेंट क्रोध से पागल हो गया; परन्तु हैरिस ने उसके दोनों हाथ पीठ-पीछे करके उसे बेकाबू कर दिया। अब विलियम ने उसकी छाती पर जो दूसरा घूँसा मारा तो वह ख़ाली पीपे की तरह मूर्छित सा होकर ज़मीन पर गिर पड़ा।

"हम लोगों ने इसे जल्दी इसलिये नहीं पछाड़ा कि ऐसा करना ठीक न होता।" विलियम ने रैशेल की ओर रुख़ करके कहा—"आपको कोई चोट तो नहीं आयी ?"

"चोट कैसे न आती। हाथ पकड़कर इस शैतान ने मरोड़

दिया और तुम खड़े देखते रहे। शर्म नहीं आती! सारा दोष तुम्हारा है। तुम दोनों कायर हो।"

"लेकिन आपको यह भी मालूम है कि अफ़सर को पीटने के अपराध में अब हमें बीस-बीस वर्ष की जेल होगी।" हैरिस ने कहा।

परन्तु हैरिस की इस भविष्यवाणी पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। इज़रा ने रैशेल को अपनी गोद में चिपका लिया। रैशेल सिसक सिसक कर रोने लगी।

एडजुटेंट चारों खाने चित्त अभी तक फ़र्श पर पड़ा था। उसकी नाक से खून बह रहा था और उसे मक्खियों ने घेरना शुरू कर दिया था।

आख़िर विलियम ने फिर मुँह खोला—"अब तो एक ही काम बाक़ी रहा है," उसने कहा—हम लोग इसे गाड़ी पर लाद कर छावनी ले चलें। कोर्ट मार्शल तो वैसे भी हम दोनों का होगा ही। ख़ैर, अभी तक हम लोग जेल में नहीं पहुँचे यही ख़ैर है। पर आप अमेरिका के लिए रवाना कब हो रहे हैं?"

आख़िरी प्रश्न कई बार दुहराने पर इज़रा ने उसकी ओर ध्यान दिया।

"कब रवाना होऊँगा? कल तड़के ही। पौ फटने के पहले ही इस पिशाच-नगरी से कूचकर देना है।" बुड्ढे ने दृढ़ प्रतिज्ञा के स्वर में कहा।

"लेकिन आपने सुना हैरिस ने अभी क्या कहा है—अगर हम लोग सफ़ाई देने की व्यवस्था न कर सके तो हमें बीस-बीस साल के लिए जेल तैयार रखी है। अगर आप हमारी गवाही दे सकें तो शायद कुछ बचत की सूरत निकल आये।"

"नहीं, नहीं," यहूदी ने कहा—"अब मैं किसी भी काम के लिए यहाँ नहीं ठहरूँगा। जिस दिन से यहाँ आये हमेशा आफ़तों से घिरे रहे। मैंने भावुकता में आकर कैसी भारी भूल की जो यहाँ आया। मेरी प्यारी बेटी इतनी परेशान हुई। अब दुनिया की कोई ताक़त मुझे यहाँ नहीं रोक सकती।"

"लेकिन हमें तो अब आपकी मदद की ज़रूरत होगी।" विलियम ने कहा।

"मैं अब किसी भी मामले में नहीं पड़ूँगा," यहूदी ने कहा—"बहुत हो चुकी। एडजुटेंट का काम तमाम होगया मालूम पड़ता है। मेरे घर में मारा गया है। बड़ी ख़तरनाक स्थिति है। कहीं मुझे भी न फँसना पड़े। तुम लोगों ने इसे मारा है—अब ले जाओ इसे यहाँ से।"

इस प्रकार थोड़ी ही देर में यहूदी अपने असली रूप में आगया। सभ्यता का हल्का पर्दा उस पर से उतर गया। अपने घर में ख़ून हो जाने के ख़याल से वह काँप उठा।

"ले जाओ इसे यहाँ से," उसने अपनी बात दुहरायी—"मेरे घर से बाहर ले जाओ। मेरे घर में लाश नहीं पड़ी रहनी

चाहिये। तुम्हें अब इसका फल भोगना ही पड़ेगा। क़ानून के फन्दे से कैसे बच सकोगे!"

"पिताजी, सुनो।" रैशेल ने कहा—"यह आदमी मरा नहीं है। ज़रा समझ-बूझकर बातें करो। ये इसे ले तो जायँगे ही; पर यह मरा थोड़े ही है—देखो, आँखें भी तो खुल रही हैं।

एडजुटेंट ने आह भर कर करवट ली।

"मैं अब पेशावर में नहीं ठहर सकता।" इज़रा ने क़सम-खाते हुए कहा—"मेरे घर में और ऐसी घटना न घटित हो जाय! ले जाओ इसे यहाँ से। उसकी कमर में अब भी रिवाल्वर है। यह हम सबको ख़त्म कर देगा।"

[६]

इधर यह घटना घटित हो रही थी और उधर सदाउल्लाह अपनी तैयारी पूरी करके यहूदी की कोठी के बाहर आ पहुँचा था। उसने दोनों सिपाहियों को कोठी में घुसते देखा था। उसके बाद उसने एडजुटेंट को भी उसमें प्रवेश करते देखा था। उसे यह भी ख़बर थी कि यहूदी दूसरे ही दिन सबेरे पेशावर से कूच करने वाला है। कोठी के आस पास कोई और सैनिक भी नहीं था। केवल तीन चार व्यक्तियों के फन्दे से यहूदी लड़की को उड़ा लेना कितना आसान है। उसके दिमाग़

में अधीरता की नदी बह चली वह अपने पचास आदमी लेकर सीधे यहूदी की कोठी की ओर लपका। सभी आदमी तलवारों से लैस थे। यहूदी के दरवाजे पर पहुँचकर उन्होंने किवाड़ पर आघात करना शुरू किया। थोड़ी देर में उन्होंने किवाड़ के एक हिस्सा को तोड़ दिया।

एडजुटेंट की मूर्छा पूर्णतः भंग हुए अभी कुछ ही क्षण व्यतीत हो पाए थे। अतः वह शोरगुल से भी वस्तुस्थिति का पता नहीं लगा सका, किन्तु दोनों सिपाहियों को स्थिति समझते देर न लगी।

"वही बदमाश सदाउल्लाह है," यहूदी ने वेदना भरे स्वर में कहा—"वह मेरी लड़की को उड़ाने आया है। उसने क़सम खायी है कि वह रैशेल का अपहरण करके रहेगा। अब क्या करूँ मेरे ख़ुदा। मैं बुड्ढा हूँ, कमज़ोर हूँ और हूँ अकेला।"

"रोना बन्द कर बुड्ढे खूसट," विलियम ने कहा—तुम्हारे पास क्या बन्दूक भी नहीं है। बिना बन्दूक तो इन मुसलमानों का मुकाबला नहीं हो सकेगा।"

"तो क्या इस बार तुम दोनों अपनी कायरता भगा देना चाहते हो," रैशेल ने कहा—"मैं तो समझती थी कि—"

"तुम कुछ भी समझो," विलियम ने कहा—"पर अगर तुम्हारे घर में बन्दूक हो तो लाओ।"

"पिताजी दो बन्दूकें अमेरिका से लाये थे।" रैशेल ने कहा।

"तो ले आओ जल्दी, और कारतूस भी। विलम्ब न करो।" विलियम ने कहा।

बाहर सदाउल्लाह के आदमियों का शोर और जोश अधिकाधिक बढ़ता ही जा रहा था। किवाड़ इतना टूट चुका था कि उसमें से होकर एक आदमी अन्दर जा सके। एक अफ़रीदी सदाउल्लाह की इजाज़त पाकर उस तंग सूराख़ से अन्दर घुसने की चेष्टा कर रहा था कि इतने में विलियम ने अमेरिकन बन्दूक में कारतूस भर कर उसे अपना निशाना बना दिया। उसके बाद जो जो सरहद्दी उस सूराख के सामने आया, विलियम की बन्दूक का निशाना बनता गया। अब सरहद्दियों का क्रोध पूर्णता को पहुँच गया। उन्होंने किवाड़ के दूसरे हिस्से पर संयुक्त प्रहार इतने ज़ोर से किया कि सारा किवाड़ टूट कर अन्दर जा गिरा।

बेचारे दो गोरे सैनिकों की ओर जब इकट्ठे बीसों सरहद्दी टूट पड़े तो वे क्या करें—फिर भी लात, घूँसे से थोड़ी देर तक उन्होंने भीड़ का मुक़ाबला किया। अन्ततः बाध्य होकर धीरे-धीरे भीड़ के प्रवाह में वे पीछे हटने लगे। ऐसा मालूम होने लगा कि अब सरहद्दी चारों ओर से घेर कर इन दोनों के सर उड़ा देंगे।

सहसा एक रिवाल्वर की आवाज़ हुई और उस आवाज़ की संख्या बढ़ती ही गयी। सरहद्दियों की आगे बढ़ती हुई भीड़ में से कई आदमी धराशायी हो गये। एडजुटेंट ठीक मौके पर

स्वस्थ होकर अपनी रिवाल्वर सरहद्दियों पर चला रहा था। इससे विलियम और हैरिस को अपनी-अपनी बन्दूकें सँभालने का फिर मौक़ा मिल गया और उन्होंने भी क्षण भर में कई आदमियों को लिटा दिया। किन्तु पीछे से अपने मालिक सदाउल्लाह की ललकार सुनकर कई सरहद्दी एडजुटेंट पर बिजली की तरह टूट पड़े और एक तो कटार से उसका काम तमाम ही करने को था कि पीछे से विलियम की बन्दूक के कुन्दे ने उसे वहीं गिरा दिया और फिर एडजुटेंट ने शेष आगे बढ़े हुए आदमियों को रिवाल्वर के घाट उतार दिया; परन्तु ज़मीन पर गिरे हुए आदमी ने इतने ही में अपनी कटार से विलियम के हाथ पर ऐसी चोट की कि वह वहीं गिर पड़ा। हैरिस ने उसे काफ़ी सँभाला और उसके आक्रमणकारी को दूसरे ही क्षण बन्दूक के घाट उतार दिया। परन्तु विलियम का हाथ बेकार हो गया था और एडजुटेंट पहले ही घायल हो चुका था, इसलिये सरहद्दियों का आगे बढ़ना रोका नहीं जा सका। तीनों गोरे सैनिक अब पीछे हटते-हटते एक कोने में आ डटे थे। किन्तु सौभाग्य से इस कोने के पास ही ऊपर चढ़ने का ज़ीना था जहाँ यहूदी अपनी लड़की के साथ साँस रोके खड़ा था। निहत्थों के पास पहुँच कर भी गोरे सैनिकों को कुछ ढाढ़स बँधा। अन्त में रैशेल के कहने पर तीनों सैनिक उन दोनों के साथ ज़ीने से चढ़ कर ऊपर पहुँच गये। इस बीच तीनों ही सैनिकों को अपने-अपने हथियार भर लेने का मौक़ा मिल गया।

ऊपर पहुँच कर दोनों ही सिपाही लगे अफ़रीदियों को एक-एक करके भूमि पर बिछाने। बुड्ढा यहूदी घबड़ा रहा था; पर रैशेल चुपचाप गम्भीरतापूर्वक पीछे खड़ी थी। एडजुटेंट ने अपना प्रयास ढीला कर दिया। इस पर विलियम ने उससे पूछा—"रुक क्यों गये? क्या कारतूस नहीं रहे?

एडजुटेंट—"कारतूस-वारतूस तो हैं; पर मुझे अब दोनों के ऊपर गुस्सा आ रहा है। तुम दोनों ने ही यह ग़दर कराया है। चलो, यहां से जान बची तो मैं तुम दोनों को कोर्टमार्शल करके जेलों में सड़ा डालूँगा।"

विलियम—"पर तुम यहाँ से बचकर जाओगे तब न? अफ़रीदियों से बच गये तो हम दोनों तुम्हें जीवित नहीं छोड़ेंगे। हम दोनों इस छत पर से बिना तुम्हारी मदद भी इन बदमाशों को समाप्त कर देंगे।"

एडजुटेंट ने रिवाल्वर का मुँह विलियम की ओर करके कहा—"ज्यादा बकवाद करोगे तो मैं तुम्हें यहीं ख़त्म कर दूँगा।"

"पर आप ही कौन बच जायँगे। हमारे घर में बिना इजाज़त घुसे भी तो आप ही हैं—"रैशेल ने कहा।

"अच्छा तो आप मुझे फँसायँगी," एडजुटेंट ने कहा—"पर आप पहले अपना मामला तो सँभालिए।"

आपने फ़ौजी इलाक़े में बिना लाइसेंस बन्दूकें रख छोड़ी थीं।

यह क्या जेल जाने का सामान नहीं है। तुम्हारा बूढ़ा बाप जेल की हवा खायेगा, यह भी खबर है क्या ?"

सदाउल्ला के आदमी फिर जोरों से आगे बढ़ रहे थे। यहाँ तक कि वे आगे बढ़कर ज़ीने पर भी चढ़ने लगे। इसी क्षण पास के मकान से गोली दगने की आवाज़ आयी जो छत पर सनसना कर निकलने लगी। यह गोलियाँ सदाउल्ला की दूसरी टोली की थीं जो पास के मकान से गोलियाँ चलाने लगी थीं।

पहले-पहल छत पर हैरिस को गोली लगी। वह फर्श पर गिर पड़ा। विलियम ने उसे पकड़ कर एक किनारे कर दिया और निशाना आगे आने वाले सरहद्दी पर लगाया। इतने ही में गोली फिर सनसना कर उसकी जाँघ में लगी; पर वह हिम्मत करके खड़ा रहा और उसने फिर दूसरे सरहद्दी को अपनी गोली का निशाना बनाया; परन्तु दूसरे ही क्षण उसे फिर कुछ छर्रे लगे। इससे उसका शरीर सुन्न-सा होगया और वह थक गया। एक ओर तो खुली छत और दोपहरी की गर्मी और दूसरी ओर युद्ध की गर्मी और गोली का प्रहार। विलियम का मस्तिष्क चक्कर खाने लगा। उसने पास झुके हुए एडजुटेंट को देखा तो क्रोध के मारे उबल पड़ा। उसकी इच्छा हुई कि इस बदमाश को समाप्त कर दे; परन्तु उसने बन्दूक को सँभालने की कोशिश की तो उसका हाथ बेकाम मालूम हुआ।

उधर सदाउल्ला के आदमी गोलियों की बौछार से थक

गये थे और ज़ीने पर से आगे बढ़ने की चेष्टा करने वालों को मरते देख वे पीछे हटने लगे। और उनका धावा भगदड़ के रूप में बदल गया।

किन्तु सहसा एक साथ बीसों गोलियों के दगने की आवाज़ आयी।

"उनकी दूसरी टोली भी आगयी," एडजुटेंट ने कहा—"अब बचना असम्भव है।"

विलियम छत की चहार दीवारी की आड़ में झुक गया। रास्ता दौड़ने वालों से भर गया मालूम होता था।

"तुम दोनों के साथ मैं भी मरा," एडजुटेंट ने फिर कहा—"न तुम दोनों इस लड़की के पीछे आते न मैं तुम्हारा पीछा करता। आख़िर इन बर्बर सरहद्दियों के हाथ इस तरह क़त्ल होना।"

वह अभी अपना वाक्य पूरा भी नहीं कर पाया था कि एक गोली सनसनाती हुई उसके मस्तिष्क में आ लगी।

विलियम ने अपनी जगह से हिले बिना ही रैशेल को देख कर कहा—"देखिये, यह तो ख़त्म हो गया। मैं समझता हूँ कि अब हमारा छत पर रहना ठीक नहीं है।"

[७]

किन्तु एडजुटेंट का अनुमान ग़लत निकला जो टोली दौड़ती हुई आ रही थी और जिसने गोलियों की इकट्ठी बौछार दूर से बिना देखे कर दी थी वह गोरी सेना की थी; सरहद्दियों की नहीं। यकायक पीछे से उसके आ पहुँचने पर सदाउल्लाह के शेष आदमियों में से कुछ तो तुरन्त गोलियों के निशान हो गये और कुछ भाग निकले गोरी सेना की कुमक आतो गयी; परन्तु विलम्ब से बेचारा एडजुटेंट भी बिना देखे अपनी ही सेना की गोली का शिकार बन गया। गोरी फौज के आ पहुँचने पर रैशेल और उसके पिता को जो ढाढस बँधा वह अवर्णनीय है।

× × ×

कई दिन व्यतीत हो गये। दोनों सिपाही—विलियम और हैरिस—सैनिक अस्पताल के कमरे में शय्या पर पड़े थे। जब पहले पहल उनकी आंखें खुली तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि वे कहाँ पहुँच गये, क्योंकि वे अचेतन अवस्था में ही गोरी सेना के द्वारा यहूदी की कोठी परसे लाये गये थे। विलियम की हालत अधिक ख़राब थी। वह क्षण-क्षण में

निद्राभिभूत हो जाता था और उसे ऐसा दीखता था जैसे किसी लाल चेहरे और कालीदाढ़ी वाले व्यक्ति ने उसका शरीर लोहे से बाँध दिया है। फिर उसे मालूम होता कि मानो वह जेल में पड़ा आजन्म कैद की सज़ा भोग रहा है और एडजुटेंट स्वयं खड़ा होकर उसे हंटर से पीट रहा है। और सब से दुख की बात यह थी कि उसे दण्ड भोगते रैशेल की मुस्कराती हुई आँखें देख रही हैं।

बहुत देर के पश्चात अन्ततः जैसे रैशैल एडजुटेंट को सम्बोधन करके बोल उठती है।

"यह दण्ड कब बन्द करोगे?"

"जब तक यह निर्जीव न हो जायगा।"

उसकी अनन्त पीड़ा जैसे समाप्त ही नहीं होने को आती। पर सहसा ऐसा मालूम होता है कि उसकी पीड़ा का मुक़ाबला करने के लिए उसके बेड़ी से जकड़े पाँवों में शक्ति आती जारही है और वह प्रतिक्षण बढ़ती जारही है। अन्त में जैसे जंजीर टूट जाती है और विलियम बोल उठता है—"नहीं, मैं निर्जीव कदापि न होऊँगा।"

"नहीं बिल्कुल नहीं," जैसे हैरिस का सुपरचित स्वर उसे सुनायी पड़ा—जल्द ही सब ठीक हो जायगा निश्चिन्त रहो।

यह सुनकर जैसे विलियम उछल पड़ा और दूसरे क्षण देखा तो हैरिस सचमुच उसकी रोग शय्या पर झुककर यही शब्द कह रहा था। हैरिस ने समझा था कि विलियम पीड़ा

से आँखें मूँदे हुए है—वास्तव में निद्रा या तन्द्रा की अवस्था में नहीं है।

हैरिस को देखकर विलियम के मुँह पर आह्लाद की एक रेखा दौड़ गयी। परन्तु दूसरे ही क्षण उसने कुछ चिन्तित भाव से पूछा—"एडजुटेंट ने कुछ कहा है?"

हैरिस इस प्रश्न से प्रफुल्लित सा हो उठा।

"अब एडजुटेंट की फिक्र करने की ज़रूरत नहीं रही," उसने कहा—"वह तो वहीं मर गया था—यहूदी की कोठी पर ही उसका काम तमाम हो गया था। छत पर गोली लगने के कारण वह गिर कर मर गया था। तुम्हें याद नहीं है?"

विलियम ने सिर हिलाया, उसके सिर से जैसे एक भारी बोझ उतर गया। क्षण भर में उसका शरीर पुलकित और स्वस्थ हो उठा।

"हाँ हाँ, अब याद आया, अभी क्षण भर पहले वह स्वप्न में यहाँ आ धमका था, इसीलिए मुझे पहले की बातें भूल-सी गयी थीं। मैंने छत पर उसे गिरते देखा था। चलो पाप कट गया।"

"मैं तो गिरफ्तारी का भय खा रहा था," हैरिस ने कहा—"परन्तु मेरी भूल थी। उस छत पर हमारे विरुद्ध कोई प्रत्यक्ष-दर्शी गवाह थोड़े ही थे।"

"क्यों नहीं, रैशेल तो थी।"

"रैशेल अगर होती भी तो भला हमारे-तुम्हारे विरुद्ध गवाही

देती—पर वह तो अमेरिका के लिए रवाना हो गयी। यहूदी पेशावर से ऐसे भागा जैसे खरगोश, अब तो वह कलकत्ते पहुँच चुका होगा।"

परन्तु विलियम ने यहूदी के प्रस्थान में कोई दिलचस्पी न ली। कुछ देर सोचने के बाद उसने सिर्फ इतना कहा—"वह लड़की थी तो खूबसूरत; पर बड़ी तुनक-मिज़ाज थी। हम लोगों से तो बड़ी घृणा करती थी। बुड्ढे ने भी हम लोगों का कोई खास एहसान नहीं माना—यादगार के लिए कोई चीज़ भी नहीं छोड़ गया।"

"छोड़ क्या जाता; यहूदी कहीं ऐसे शाह खर्च होते हैं। उसने तो धन्यवाद देने में भी कोताही की। हम लोगों ने उसकी जान बचायी; पर उसने लखपती होते हुए भी किसी तरह की कृतज्ञता नहीं प्रकट की।"

"कोई हर्ज नहीं। हम लोग तो फिर भी स्वस्थ हो रहे हैं पर एडजुटेंट को क्या मिला। उसे तो जान से हाथ धोना पड़ा।"

"पर मुझे तो उस बुड्ढे खूसट यहूदी पर ऐसा गुस्सा आ रहा है कि सामने होता तो—"

किन्तु इसी समय एक चिट्ठीरसा ने आकर कहा—"आपकी एक रजिस्ट्री है। दो दिन से छावनी में पड़ी थी। अब यह पता मालूम होने पर अस्पताल लायी गयी।"

विलियम ने लिफ़ाफ़ा हाथ में लिया, उस पर कलकत्ते की मुहर थी।

"कलकत्ते से मेरे पास रजिस्टर्ड लिफ़ाफ़ा किस ने भेजा है। मेरा तो वहाँ कोई परिचित भी नहीं है। हस्तलिपि तो स्त्री की मालूम पड़ती है—"

"इसमें कुछ माल मालूम होता है" हैरिस ने लिफ़ाफ़े को हाथ लगाते हुए कहा—"देखिए कितना भारी है।"

विलियम ने दस्तख़त करके लिफ़ाफ़ा खोला तो उसमें सच-मुच हज़ार हज़ार रुपये के दो ताज़े नये नोट निकले।

"यहूदी ने तो कमाल कर दिखाया," हैरिस ने कहा—"दो हज़ार रुपये भेज दिये।"

नोटों के साथ जो संक्षिप्त पत्र नत्थी था उसे आँखें फाड़-फाड़ कर पढ़ते हुए विलियम ने कहा—"यह पत्र और रुपये उस लड़की ने भेजे हैं; बुड्ढे ने नहीं।" और "सुनो" कह कर पत्र पढ़ने लगा:—

"मैंने आपके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। मेरे पास मेरा निजी रिवाल्वर था और मैंने ही एडजुटेंट का काम तमाम किया था। किन्तु इसके लिये मुझे दुःख नहीं है। उसने हमें धमकी दी थी कि हम अमेरिका न जा पायेंगे, पर मैं किसी के भी रोके रुकना नहीं चाहती थी।

"मैंने कहा था कि 'तुम दोनों कायर हो।' मैं अपने ये शब्द वापस लेती हूँ। मुझे ऐसे घृणा-व्यंजक शब्द कहने नहीं चाहिये थे। मुझे प्रसन्नता है कि आप लोगों को ज़ेल की हवा न खानी पड़ेगी।

"पिताजी की तबीयत पर पेशावर में जो धक्का लगा था अभी उसका असर गया नहीं है और वे स्वस्थ नहीं हो सके हैं; परन्तु उन्होंने मुझे कहा है कि आप लोगों ने उनके साथ जो अच्छा बर्ताव किया है उसके लिए वे आपके कृतज्ञ हैं और कृतज्ञता के चिन्ह-स्वरूप इस पत्र के साथ आप दोनों को कुछ भेंट करते हैं।"

क्षण भर दोनों सिपाही उन नोटों की तरफ़ और फिर एक दूसरे की ओर देखते रहे।

"तुम तो कहते थे कि यहूदी कंजूस होते हैं," विलियम ने हैरिस से कहा—"देखा कैसे कंजूस होते हैं।

"पर यार उस छोकरी ने एडजुटैंट को किस सफ़ाई के साथ उड़ा दिया। किसी ने भी नहीं देखा।" हैरिस ने कहा।

"पर तुमने यह भी देखा कि उसने हम लोगों पर कितना अधिक विश्वास करके ऐसी गोपनीय बात लिख दी है।" यह कह विलियम ने दो नोटों में से एक को चुटकी से अलग करके हैरिस के हाथ की ओर बढ़ा दिया।"

"यह तुम्हारा है," उसने कहा—"पर मुझे दियासलाई दो। यह पत्र तुरन्त जला दिया जाना चाहिए—जल्दी करो।"

क्षण भर में बेन इज़रा का अपनी 'पितृभूमि' को भेजा हुआ वह अन्तिम चिह्न राख हो गया।

[८]

कलकत्ते से जहाज़ अमेरिका के लिए रवाना हो चुका था और एक सप्ताह की यात्रा के बाद समय कटना मुश्किल सा हो रहा था। इस उकता देनेवाली यात्रा से ऊबकर एक दिन रैशेल ने अपने पिता से पूछा—"पिताजी, अब तो कभी पितृभूमि लौटने का ख़ब्त नहीं सवार होगा ?"

"अभी तो हम अमेरिका पहुँचे भी नहीं बेटी; पर मैं सच कहता हूँ—न जाने पितृभूमि में क्या आकर्षण है। इतने कष्ट उठा कर भी मुझे उससे घृणा नहीं हुई और मेरा मन कहता है कि तुम्हारी शादी हो जाने के बाद मैं एक बार फिर इस भूमि के दर्शन करूँगा और चलते समय जिस शमसुद्दीन से हम नहीं मिल सके उसे एक बार फिर छाती से लगाऊँगा।

समाप्त

हिन्दी काव्य की कलमयी तारिकाएँ

लेखक श्री व्यथित हृदय

भूमिका ले०-श्री रामशंकर शुक्ल "रसाल" एम० ए० डी० लिट्

प्रस्तुत संग्रह स्त्रियों के द्वारा रचे गए साहित्योद्यान से बड़ी सहृदयता तथा भावुकता के साथ चुने गए सुन्दर प्रसूनों का हृदयहारी-हार ही है। इसमें मीराबाई से लेकर वर्त्तमान समय तक की प्रमुख कवित्रियों का परिचय और उनकी आलोचनात्मक सुन्दर रचनाएँ एक चतुर तथा आलोचक कवि हृदय रखने वाले सुयोग्य संग्रहकार के द्वारा संकलित की गई हैं। श्रीयुत 'रसाल' जी ने अपने प्राक्कथन में गाथा-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास भी दे दिया है। हिंदी में यह अपने ढंग की बेजोड़ पुस्तक है। सजिल्द और एक दर्जन से अधिक चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य २॥)

'महादेवी वर्मा'

वर्त्तमान हिन्दी का काव्य साहित्य महादेवी जी की प्रांजल श्री विभूत से आभूषित है। इस पुस्तक में उन्हीं के काव्य का विशद विवेचन है। इसके लेखक श्री गंगाप्रसाद जी पाण्डेय तथा श्री संतकुमार जी वर्मा हैं। वर्तमान काव्य के आलोचकों में पाण्डेय जी का नाम अपरिचित नहीं, इस पुस्तक में आलोचक द्वय ने महादेवी जी की कविताओं का उनकी कृतियों के क्रम से पाठकों के लिये एक बहुत ही उत्तरदाइत्व पूर्ण अध्ययन उपस्थित किया है। अपने आलोचक जीवन के उषाकाल से ही पाण्डेय जी ने महादेवी जी पर पाठकों को जो सामग्री दी है उसके विचार से इस पुस्तक की उपादेयता अत्यन्त बढ़ जाती है। पुस्तक में, महादेवी जी की कृतियों, भावनाओं तथा उनकी काव्य विशेषताओं का एवं काव्य की सहज प्रवृत्ति प्रेरणाओं का मार्मिक निदर्शन है। महादेवी जी पर यह पहली पुस्तक है। उनके पाठकों की सुबोधता में इस पुस्तक की सहायता निस्सन्देह सोपान का काम करेगी। मूल्य केवल १।)